Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५० पैसे

२८ मार्च,
१९७६

# जन ज्ञान

साप्ताहिक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विचार मंथन

# झूठ और सच

बरगद का वृक्ष—इससे डालियां फूटती हैं और धरती में नई जड़ पकड़ लेती हैं। धीरे-धीरे इसकी छाया इतनी सघन हो उठती है कि इसके तले सहस्त्रों समय को धूप बचाते हैं और क्षणिक ही भले हो, किन्तु विश्रान्ति पाते हैं। हारे थके इन्सान, उसकी शरण में आकर 'सुख' पाते हैं और हर्षित हैं। प्रफुल्लित हो जाते हैं। उनकी थकन मिट जाती है, नई चेतना सी आती है। किन्तु यह शांति होती है क्षणिक। और यह वृक्ष है प्रतिमान झूठ का। जो अपने क्रियाकलाप में ठीक ऐसा ही होता है—जो भी इसे उगाता है या इसे अपनी शरण स्थली बनाता है; उसे यह शांति का आभास कराता है, किन्तु कैसे है यह शान्ति-क्षणिक-अस्थायी और तनिक सुख के उपरान्त चिर दुःखदायिनी।

और यह आक का पौधा। रेगिस्तान में भी उगता है या खेतों की मेड़ों पर अथवा सर्वथा बिना उगाए ही किसी खेत खलिहान में या रेगिस्तान में। इसमें फूल भी उगते हैं किन्तु फिर यह फूट पडते हैं और उनमें से उड़ उठते हैं रेशे। और फिर यदि कोई उन्हें न सहेजे जो वे इतनी दूर-दूर फैल जाते हैं कि अपना अस्तित्व भी गंवा बैठते हैं।

आक दूध भी देता है। किन्तु ऐसा कि जिसे कोई पी नहीं पाता और यदि पी जाए तो क्या होता है, उसकी कल्पना कठिन नहीं। क्योंकि आक के दूध की बूंद के किसी की आंख में जा पड़ने मात्र से ही उसका नशा तो उतर ही जाता है, साथ ही वह बेचारा नेत्रों की ज्योति भी खो देता है। सिसकियां लेता है। नेत्र नीर बहाते हैं और पीड़ा से छटपटाते हैं।

आक का पौदा ही है सत्य। इसे न कोई बोता है न सहेजता है। यह अपने आप ही उग आता है, जहां अपने अनुकूल जलवायु पा जाता है। इसका विस्तार शाखाओं व डालियों में नहीं होता। न यह धूप में सहारा बनता है और न ही किसी के ताप को हर पाता है। किन्तु यह भी सत्य है कि जो आक के फूलों की परिश्रम से सहेजता है, उसकी रूई को बटोरता है, एकत्रित करता है, उसका संग्रह करता है वह उसी फूलों से झड़ी रूई से ही अपना तकिया बनता है। उसे वह अपने सिरहाने लगाता है तो उसके तन मन की थकान मिट जाती है और उसे नींद भी निश्चिन्तता की आती है। आनन्द की नींद-शाश्वत सुख की निद्रा, सत्य और झूठ में बस इतना ही अन्तर है एक है वृक्ष और दूसरा है पौदा; दोनों का अलग-अलग है स्वभाव।

—वचनेश

# ब्रह्मचर्य की महिमा

स्व० पं० नाथूराम शंकर शर्मा

दोहा

रहे जन्म से मृत्युलों, ब्रह्मचर्य—व्रतधार।
समझो ऐसे वीर को, पौरुष पुरुषाकार ॥१॥
बाल ब्रह्मचारी जहां, उपजे परमोदार।
शंकर होता है वहां सबका सर्व—सुधार ॥२॥
बाल ब्रह्मचारी रहे, पाय प्रताप—अखण्ड।
पाठक ? आगे देखलो, पांच प्रमाण प्रचण्ड ॥३॥

पुरुषोत्तम परशुराम

चूका कहीं न हाथ गले काटता रहा।
पैना कुठार, रक्त बसा, चाटता रहा॥
भागे भगोड़, भीरू भिड़ा, धीर न कोई।
मारे महीप, वृन्द बचा, वीर न कोई॥
सुप्रसिद्ध राम, जामदग्न्य, का कुदान है।
महिमा-अखण्ड, ब्रह्मचर्य की महान् है ॥१॥

महावीर-हनुमान

सुग्रीव का सु-मित्र बड़े, काम का रहा।
प्यारा अनन्य, भक्त सदा-राम का रहा॥
लङ्का जलाय, काल खलों को सुझा दिया।
मारे प्रचण्ड, दुष्ट, दिया भी बुझा दिया॥
हनुमान बली, वीर-वरों, में प्रधान है।
महिमा-अखण्ड, ब्रह्मचर्य की महान् है ॥२॥

महात्मा शंकराचार्य

संसार सार, हीन सा उड़ा दिया।
अल्पज्ञ जीव मन्द दशा, से छुड़ा दिया॥
अद्वैत एक, ब्रह्म सर्वों, को बता दिया।
कैवल्य-रूप, सिद्धि-सुधा, का पता दिया॥
भ्रम-भेद भरा, शंकरेश, का न ज्ञान है।
महिमा-अखण्ड, ब्रह्मचर्य, को महान् है ॥४॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती

विज्ञान-पाठ वेद पढ़ों, को पढ़ा गया।
विद्या-विलास, विज्ञवरों, का बढ़ा गया॥
सारे असार, पन्थ मतों, को हिला गिया।
आनन्द-सुधा, सार दया, कर पिला गया॥
अब कौन दयानन्द यती, के समान है।
महिमा-अखण्ड, ब्रह्मचर्य, की महान् है ॥५॥



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

ओ३म्

# जनज्ञान

वेदाः

हिन्दी साप्ताहिक नई दिल्ली

वर्ष १ ● रविवार २८ मार्च, १९७६ : १६ चैत्र २०३२ ● अंक ७

ओ३म्

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का एक प्रकाशन

सम्पादक
राकेश रानी

सह-सम्पादक
कु० आभा
दूरभाष : ५६६६३९

पता :
वेद मंदिर
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग
[निकट ३१, नाईवाला]
करोल बाग, नई दिल्ली-११०००५

वार्षिक मूल्य २०)
विदेश में ५ पौंड : हवाई डाक से
३ पौंड : समुद्री डाक से
आजीवन ३०१ रु०
वर्ष १ : अंक ७

१६ चैत्र : संवत् २०३२
दयानन्दाब्द । १५१
सृष्टि संवत् । १९६०८५३०७६

सम्पादकीय

## प्रलय से पहले : प्रवाह के बाद

सर्वनाश से पहले बुद्धि समाप्त हो जाती है। इस तथ्य के अनुसार इतिहास की घटनाएं बता रही हैं किसी की भी समाप्ति किसी बाहरी शत्रु द्वारा नहीं हुई, अपितु स्वयं अपनी ही दुर्बलताओं ने अपनी जड़ें खोदी हैं।

जब मस्तिष्क विकृत हो जाता है तब मनुष्य अपनी भूल को भी गुण समझ लेता है और बार-बार भूलें करता है। एक बार भूल कर बुद्धिमान् उसका सुधार कर लेते हैं। पर मूर्ख कभी अपनी भूल पर नहीं पछताता।

प्रलय से पहले आंधियां चलती हैं। तूफान उठते हैं, पर जिसने मिटना ही होता है वह कुछ भी नहीं बदलता और मिट जाता है।

आर्यसमाज का संगठन आज मस्तिष्क की विकृति की चपेट में है। आत्म-श्लाघा, आत्म प्रशंसा, पद, स्वार्थ का मोह और आपसी संघर्ष ने सब कुछ झकझोर कर रख दिया है, पर किसी की भी नींद नहीं खुलती। चारों ओर अंधेरा है, फिर भी पथ भ्रष्टता है, विभ्रम है। न लक्ष्य का ज्ञान, न उसके प्रति आकर्षण। "ऋषि दयानन्द की जय" बोलकर उनके भावों की जितनी उपेक्षा आज की जा रही है, उसकी तुलना नहीं।

दूर पार के गांवों में हिम, शिखरों पर, वनों में ईसा के शिष्य जीवन अर्पण कर अपनी भावना का साम्राज्य स्थापित कर रहे हैं। नकली भगवान् मां-बहनों-भाइयों को बहका रहे हैं। ढोंग और झूठ एक साथ धर्म के नाम पर फैल रहे हैं।

पर किसे चिन्ता है, दर्द किसे होता है। धनपति नाम के लिए लाखों दे सकते हैं, पर काम के लिए एक पैसा भी उनके पास नहीं रहता। युवक मालाएं पहनने के लिए उत्सुक हैं पर गर्दन कटाने के लिए कोई तैयार नहीं।

विशाल आर्य शक्ति स्वार्थान्ध होकर सुप्त है। प्रलय से पहले की स्थिति आ पहुंची है पर कहीं से आशा की किरण नहीं दीख रही। प्रवाह यदि हो गया तो कौन बचेगा ?

धीरे-धीरे जीवन का संगीत छेड़कर हम आशा का डमरू बजा रहे हैं। क्रन्दन में निर्माण के लिए स्वर उभारे हैं। एक ही आवाज लगायी है, जागो·····जागो ·····और दयानन्द का काम करो।

ऋषि दयानन्द का काम, श्रीराम का काम है। उन्होंने रावण का संहार किया था, आज तो अनेक रावण सिर उठाए घूम रहे हैं। आर्यसमाज का काम योगिराज श्री कृष्ण का काम है।

ऋषि-मुनियों की परंपरा प्रलय से बचेगी, प्रवाह अमृत बरसाएगा और विनाश से पहले ही हम निर्माण का गढ़ बना सकेंगे, इसी विश्वास से ऋषि के अनुयायियों को निमंत्रण दिया है। अस्वीकार करेंगे·····क्या ?

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—राकेश रानी

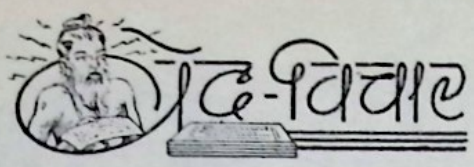


**अग्ने त्वन्नो अन्तम उत त्राता शिवा भवा वरूथ्यः।**
**वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमं रयिन्दाः।**
**यजुर्वेद अध्याय ३।२५**

पदार्थ—हे ! (अग्ने) सब की रक्षा करने वाले जगदीश्वर ! जो (त्वम) आप (वसुः) सब प्राणी जिसमें वास करते हैं। और (अग्निः) विज्ञान प्रकाश युक्त (नक्षि) सब जगह व्याप्त है सो आप (नः) हम लोगों के (अन्तमः) जीवन के हेतु (त्राता) रक्षा करने वाले (वरूथ्य) श्रेष्ठ गुण, कर्म और स्वभाव में होने (शिवः) तथा मंगल करने वाले (भव) हूजिये। और (उत) भी (न) हम लोगों के लिये (द्युमत्तमम्) उत्तम प्रकाश से युक्त (रयिम्) विद्या चक्रवर्ती आदि धनों को (अच्छ दाः) अच्छे प्रकार दीजिए !

**—(महर्षि कृत भाष्य)**

व्याख्या—संसृति के नियन्ता, सर्व रक्षक प्रभु से मानव हृदय सामीप्य स्थापित करने के लिए प्रार्थना करता है। अंतस् के व्यथित तारों द्वारा, झंकृत रागिनी विश्व-पथ पर प्रगति करते हुए जब हमें व्याकुल, आकुल कर देती है उस समय हम सर्व स्थानों में प्रभु की सत्ता का अनुभव करते हैं। मानव जगदीश्वर की प्रेरणादायक अनुभूतियों द्वारा असीम आनन्द की लक्ष्य सिद्धि के लिए प्रगतिशील रहता है। निरन्तर प्रकाश की चाह में अपनी साधना को संलग्न कर हम शुभ गुण कर्मयुत हो विश्व मंगल का हेतु बन जायें। परम पिता परमात्मा की पावन गोदी में बैठ सारे कष्ट, और गहन तमस् को विस्मृत कर सकने में सफल हों। हम सम्पूर्ण ज्ञान संबल के बल से गहन गर्त में पड़ी सिसकती आत्माओं की उन्नति का भी कारण बनें।

दयामय की राह हमारे लिए स्वर्गीय जीवन का मधु-मय वरदान सिद्ध हो। हम सुखी हों देव। धनी हों नाथ। सर्व गुण-बल, ऐश्वर्य युक्त हों स्वामिन् ! पर हमारा जो कुछ भी हो वह तुम्हारे लिए ही हो। निरन्तर सभी कुछ पाने की चाह लिए कर्म करते रहने पर भी हमारा सब कुछ तुम्हारे ही अर्पण हो।

शाश्वत ! मंगलमय ! कीर्ति-वर-दायक ! अनुपम प्रकृति के नियन्ता ! चिर आराध्य ! मैं तेरी भाव धूलि की सुरभि पा जीवन को तेरी राह पर ढाल सकूं। मेरे देव ! मेरी आत्मा के प्रकाश ! मेरे प्रियतम ! मेरे सभी कुछ तुम हो, फिर मैं कैसे दूर रहूं ?

नियति-चक्र-आधार ! सच्चे हृदय से चरण पुजारिन हो, तुम्हारे पास आई हूँ ! निराश न करना ? अन्तर्यामी। सभी कुछ जानते हो। फिर कहूँ तो क्या कहूँ पर फिर भी तुम्हारे ही शब्दों में तुम्हीं से तुम्हारी मंजुल राह की पथिक बनने की याचना करती हूँ।

दिव्य आधार ! प्रकाश पाकर मैं तुम्हें भूलूंगी नहीं। जो भी मेरे पास होगा, सभी मैं तुम्हारे चरणों में अर्पित कर दूंगी। फिर भी हे प्रकाश रूप ! क्षुब्ध, सुप्त, मन-मन्दिर में तुम्हारी ज्योति की प्रतीक्षा करूंगी। चिर अनन्त की सीमा तक प्रतीक्षा करूंगी। मुझे विश्वास है कि मैं सफल हूंगी। तुम्हारा अमिट ज्ञान, अलौकिक प्रकाश, मेरी ज्ञान-प्रभा को आलोकित करेगा, प्रेरणा देगा।

बल दायक प्राण ! तुमको पाकर सब खो दूं और सभी पा लूं। करो ऐसा नाथ ! दो ज्ञान। दो प्रकाश। मत ठुकराओ देव ! मेरे सर्वस्व ! मुझे विश्वास है तुम्हारा। चल पड़ी हूँ तेरी राह पर। तुम मिलोगे ही। सच्चे हृदय से तुम्हें पुकार रही हूँ। तुम आओगे भी।

## आवश्यक सूचना

पंडिता राकेशरानी के नाम सभी पत्र-शिकायतें-धन वेद भाष्य कार्यालय ३३७-ए, सूर्यनगर निकट विवेक बिहार, P.O. चिकम्बरपुर, दिल्ली-३२ पर भेजें।

पं० भारतेन्द्रनाथ जी के नाम पत्र व लेख, समाचार आदि वेद मंदिर, नई दिल्ली-११०००५ के पते पर भेजें।

पुराने सदस्यों को वेद भाष्य शनि-रवि छोड़कर सूर्य नगर से ही दिया जाएगा। केवल शनिवार को करौल बाग से दिया जाएगा।

**—प्रबंधक**

## वी० पी० की आदत छोड़िए !

इस बीच रजिस्ट्री और वी० पी० का व्यय बहुत बढ़ गया है। अतः शुल्क समाप्ति का पत्र मिलते ही अपना धन एम० ओ० से भेज दें।

इससे धन की बहुत बचत होगी। अब वी० पी० पी० में ४ रु० व्यय होगा।

**—सम्पादक**

**अधिक से अधिक सत्यार्थ प्रकाश बांटिए !**

**कागज फिर महंगा हो गया। अतः ३० अप्रैल तक ही रेट २००) सैकड़ा रहेगा।**

**—प्रबंधक**



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

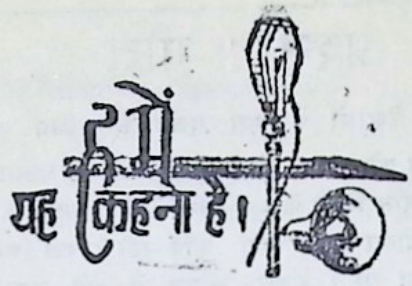


# निकालो नहीं : मिलाओ !

पिछले कुछ दिनों से हमारे आर्यसमाज संगठन में यह भारी दुर्बलता आ गयी है कि हम किसी से तनिक सा भी मतभेद होने पर उसे संगठन से निकाल देते हैं।

देखने में आ रहा है कि कल तक हम जिन्हें पलकों पर बिठाते थे, उन से मन नहीं मिला तो जोर से धरती पर पटक दिया। किसी ने तनिक भी आलोचना की कि हम आग बन गए, सारा प्यार जाता रहा।

घृणा-द्वेष और शत्रुता के बल पर कोई आगे नहीं बढ़ सकता। दुर्गुण किस में नहीं हैं। अगर हम यही देखते रहें तो सचमुच हम दुर्गणों का घर ही बन जाएंगे !

संगठन प्यार से बनते हैं। जो जितना बड़ा होता है, उसे उतना ही उदार भी होना ही चाहिए। बदले की भावना क्षुद्रता की निशानी है। हमें इतना बड़ा दिल रखना चाहिए कि जो हमारा अहित भी करे हम उसे क्षमा कर सकें।

आर्यसमाज संगठन है, कोई सम्प्रदाय नहीं। इस का उद्देश्य है, ऋषि दयानन्द के सपनों को पूर्ण करना। जो भी इस दिशा में काम करे, हमें उस का स्वागत करना चाहिए। विचार भेद होने से किसी के भी कार्यों का मूल्यांकन न करना संगठन को हानि पहुंचाने का सब से बड़ा कारण है। आज का समय आपस में लड़ने का नहीं, अपितु समस्याओं से जूझने का है। धन जमा करने की प्रवृत्ति और फूट पिशाचिनी से प्यार, यह दो बड़ी बाधाएं हैं, हमारी प्रगति में। इन से जितना शीघ्र छुटकारा मिले, उतना ही कल्याण है।

## सत्संग सुधारो !

अनेक बार इस दिशा में हम आर्यसमाजों के अधिकारियों का ध्यान आकर्षित कर चुके हैं। इस दिशा में हमें सक्रिय होकर सत्संगों को आकर्षक बनाने में लग जाना चाहिए।

सत्संग में प्रबन्ध सम्बन्धी विवादों पर विचार नहीं होना चाहिए। अन्तरंग सभाएं भी सत्संग के बाद नहीं रखनी चाहिएं। वातावरण धार्मिक बनाएं ! प्रेम से सभी से व्यवहार करें और नए आने वालों का सदा स्वागत करें।

जहां तक हो पूरे परिवार सहित सत्संग में आइए। और ऐसा स्वभाव सब का बनाइए कि सभी सपरिवार सत्संग में प्रति सप्ताह अवश्य जाएं !

जिस आर्यमताज का साप्ताहिक सत्संग जितना आकर्षक प्रभावशाली होगा, उतनी ही शक्तिशालिनी वह समाज मानी जाएगी।

**शताब्दी वर्ष में आइए हम सब संकल्प लें कि हमारे आर्यसमाज में १०० से कम व्यक्ति सत्संग में नहीं आएंगे।**

## "आर्य" बनाने का आन्दोलन आरम्भ कीजिए

शताब्दी वर्ष जा रहा है। और हम नयी शताब्दी के प्रथम चरण में प्रवेश कर रहे हैं।

इस ऐतिहासिक अवसर पर आज आवश्यक है कि हम अधिक से अधिक व्यक्तियों को 'आर्य' बनाने का अभियान आरम्भ कर दें।

विद्यार्थियों का ग्रीष्मावकाश भी आरम्भ होने वाला है। इन गर्मी की छुट्टियों में अधिक से अधिक व्यक्तियों को आर्य बनाने का अभियान आरम्भ किया जाना चाहिए !

सदस्यता के फार्म बिना मूल्य पत्र लिख कर मंगा सकते हैं। वार्षिक सदस्यता शुल्क केवल १) रखा गया है। प्रत्येक व्यक्ति कम से कम १००० सदस्य बनाए। १००० सदस्य बनाने वालों को ५००) का साहित्य प्रचार के लिए मुफ्त भेजा जाएगा।

आर्यवीरों से प्रार्थना है कि वे उठें तूफान बन कर, मन में क्रांति ज्वाला भरकर, और प्रत्येक भारत के नागरिक को आर्य, अर्थात् ईश्वर का पुत्र—अच्छा व्यक्ति बनाने का संकल्प लेकर कार्य आरम्भ करें।

काम और केवल काम ही देश का भाग्य बदल सकता है। इस तथ्य को हम समझें और हर घर में सत्यार्थ प्रकाश—ऋषि जीवनी पहुंचाएं। प्रत्येक व्यक्ति को आर्य सदस्य बनाएं !

सारा देश आर्य बनाने के लिए हम आपको, ऋषि भक्तों को पुकार रहे हैं।...निमंत्रण स्वीकार कीजिए।

## जन-ज्ञान [साप्ताहिक] के नए सदस्य बनाइए

आप के हाथ में साप्ताहिक जन-ज्ञान का ६ठा अंक



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। आप इसे देख रहे हैं। इसका प्रकाशन हमने केवल आप के भरोसे आरम्भ किया है।

बिना धन-साधन के हमने इतना बड़ा बोझ उठालिया। आप सोचिए तो सही कि क्या काम करना अपराध है?

जो नारे लगाते हैं, उन के साथ आप भी बहक जाते हैं। पर काम आप के सामने है और आप सो रहे हैं, आखिर गाड़ी कैसे चलेगी?

अपना कर्त्तव्य स्वयं सोचिए और कुछ ऐसा कीजिए कि हम तेजी से आगे बढ़ सकें।

सहयोग दीजिए—

१. जन-ज्ञान (साप्ताहिक) के नए सदस्य बना कर

२. आजीवन सदस्य बनकर और बनाकर

३. प्रत्येक शुभ अवसर पर दान भेजकर!

आप यह कभी भी न भूलें कि आप का जितना सहयोग मिलेगा, उतनी ही तेजी से हम आगे बढ़ेंगे।

## सत्यार्थ-प्रकाश बांटिए

आर्यसमाज के फैलने में सब से बड़ा योगदान सत्यार्थ प्रकाश का है। इस अमर ग्रन्थ के द्वारा सत्य का प्रकाश फैला है और फैल सकता है।

संस्थान अब तक लाखों सत्यार्थ-प्रकाश प्रसारित कर चुका है। इस समय भी वह यह महान् ग्रन्थ अच्छे कागज पर २) में दे रहा है। इस कार्य के लिए उसे भारी घाटा उठाना पड़ रहा है, फिर भी हम इस के प्रसार के लिए यत्न कर रहे हैं।

अगर आर्यसमाजें १) में सत्यार्थ प्रकाश के लिए तैयार हो जाएं और प्रतिमाह २५ परिवारों में भी इस अमर ग्रन्थ को पहुंचाए तो भारी कार्य हो सकता है।

योजना बनाइए और घर-घर में सत्यार्थ—प्रकाश पहुंचाने का निश्चय कीजिए —भारतेन्द्रनाथ

## तनिक सोचो

सोचो!

प्रतिदिन, यहां तक कि प्रत्येक क्षण ही। जो कुछ आप कर रहे हैं, उनमें से साथ क्या जाएगा?

जागो!!

और गंभीरता से अन्तर्मुखी होकर के यह विचार करना भी न भूलो कि किसी कार्य करने या न करने पर—वह कौन सी अदृश्य, अज्ञात शक्ति कार्यरत है, जिसके बिना हमारा प्राण नहीं चल सकता—वृक्षों तक का पत्ता भी नहीं हिल सकता।

उसे पहचानो!!!

## प्रश्न : गीत

अंधकार की रेखाओं से नया सृजन कैसे प्रिय होगा,
शून्य साधना की मंथर गति, कैसे मानस को बतलाए?
कैसे काली रात किसी के मन मंदिर को गीत सुनाए।
प्राणों में जीवन की वीणा, कांप उठी है नदी किनारें,
स्नेह सुधा का अमृत मंथन, जीवन में कैसे मुस्काए।
तुम्हीं बता दो, नीरवता में, गीतों का गुंजन क्यों होगा?
अंधकार की रेखाओं से, नया सृजन कैसे प्रिय होगा?

नीले नभ के पार, उषा की थिरकन मैंने देखी,
स्वप्न देश में पीड़ा का शृंगार थिरकता भी देखा है,
देखी मैंने ठंडी ज्वाला, सत्य सुधा के अंतर तल में—
गंगा की लहरों पर आशा अनजानी सी मैंने देखी,
शीतल लहरों का अवगुंठन, कौन हटाए, कैसे होगा,
अंधकार की रेखाओं से, नया सृजन कैसे प्रिय होगा?

पता नहीं जीवन मंजिल का, ज्ञात नहीं है लक्ष्य ललाम,
मरघट कब पहुंचेंगे हंस कर, कौन जानता है यह ज्ञान,
नीरवता में कोलाहल की, ध्वनि कैसे प्रिय लग सकती है,
दीप जलाकर किसने खोजा, प्राण सुधा का भावक गान,
चलते-चलते थककर बैठे, हिम गिरि पर चढ़ना कब होग?
अंधकार की रेखाओं से, नया सृजन कैसे प्रिय होगा?

कौन सितारों की दुनियां में, अपने स्वप्न सजा बैठा है,
कौन निराशा की लहरों पर, मादक गीत बजा सकता है,
टूटे स्वर पर सब हंसते हैं, ज्योति नहीं देखी है हमने,
अंतर के तारों से कोई, कैसे गीत सुना सकता है,
जब तक ज्योति न जागी मन की,
कल्याण कहो प्रिय कैसे होगा?
अंधकार की रेखाओं से, नया सृजन कैसे प्रिय होगा?

—भारतेन्द्रनाथ

—आर्य गुरुकुल यज्ञतीर्थ एटा का वार्षिकोत्सव दिनांक ३ से ६ अप्रैल तक आयोजित होगा। इसमें अनेक आर्य महात्मा तथा नेता भाग लेंगे।

—आर्य समाज दीवान हाल, दिल्ली का वार्षिकोत्सव २६ से २८ मार्च तक सम्पन्न होगा।

—आर्य युवक कांग्रेस दिल्ली की ओर से आर्यसमाज आर्यपुरा में आयोजित एक बैठक में दहेज उन्मूलन अभियान चलाने के लिए एक अभियान समिति की गठन किया गया है।

—गुरुकुल गौरोला जिला अलीगढ़ का उत्सव १५-१६-१७ जून को आयोजित होगा। यज्ञ के पश्चात् छात्रों का प्रवेश भी आरम्भ हो जाएगा।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—कैलाश सत्यार्थी

एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण—

# "युवा पीढ़ी और आर्यसमाज

●●●

किसी ने कहा है—"यदि तुम किसी समाज की समूची अंतर्चेतना को जानना चाहो तो उसकी युवा पीढ़ी की मनः स्थिति को समझलो।' इतिहास की कसौटी पर यह बात पूर्णतः सही है। हमारे देश को ही लिया जाय, कभी युवा सुभाष ने सिंहनाद किया था। तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा' कभी बिस्मिल हुंकारा था--'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है' कभी भगत सिंह ने 'इंकलाब जिंदाबाद के बुलन्द उद्घोष के साथ फांसी के फन्दे को चूमा था। यह कल था, और आज—कोई युवा भाई गुनगुनाता है 'चल दरिया में डूब जाएं' कोई बहन कहती है—सावन जो आग लगाए उसे कौन बुझाए।' हाय !!! कैसी विडम्बना है जिसका उद्घोष 'सिन्धु ने ही नाम साम्राज्यं सुषुवेवृषा' होना चाहिए वह नदी में डूबने जा रहा है। जिसे 'अग्निनामे अग्निः समिध्यते' को आदर्श मान कर खुद जल कर समाज को प्रकाश देना चाहिए–उसे सावन की आग की चिन्ता है।

पुरानी पीढ़ी ने तो विनाश, चारित्रिक पतन, पाप अनाचार की संज्ञा इस स्थिति को देकर समूची पीढ़ी को कोसना ही अपना धर्म बना लिया है। यद्यपि कुछ सांस्कृतिक और नैतिक संगठन मात्र नारे लगवा कर अथवा उपदेश बाजी करके इससे छुटकारा पाना चाहते हैं। यह बात हमारे देश की नहीं, अपितु तमाम दुनियाँ की युवा पीढ़ी में पिछले एक दो दशकों से एक विचित्र समस्या की तरह उभरी है। यहां इतना अवश्य स्वीकारना पड़ेगा कि इसके कारण सतही नहीं, बल्कि गम्भीर और बुनियादी हैं।

हमारे देश के परिप्रेक्ष्य में युवा पीढ़ी का पहला वर्ग ग्रामीण—हुक्का, चिलम, बीड़ी, शराब से मस्त होकर ताश, जुआ खेलने बैठ कर ग्रामबालाओं पर आवाज कसी करने में मस्त है। बेरोजगारी और गरीबी के कारण चोरी और कुप्रवृत्तियां भी पनप रहीं है। यह पूरा वर्ग शहरी करण के अनुचित संक्रमण से गुजर रहा है। दूसरा वर्ग—शहरी—लम्बे-लम्बे बाल, चौड़ी मोहरी का बैलबाटम-विचित्र सी कमीज, मुँह से सिगरेट का धुँआ उड़ता—काफी हाउसों में कहकहे लगाता—आधुनिकता की मृगमरीचिका के पीछे बेतहाशा भाग रहा है। प्रगतिशीलता के व्यामोह ने जहाँ इस पीढ़ी को ईश्वर धर्म-आध्यात्मिकता के प्रति अविश्वासी बनाया है वहां एक सर्वथा आधार रहित आदर्श हीन जीवन की ओर प्रेरित किया है। आदर्श की बात उसे दकियानूसी लगती है। धर्म की परंपरा, इतिहास की गर्प्पे नैतिकता को बकवास राष्ट्रीयता को पिछड़ापन अनुशासन को रूढ़ीवादिता मानना उसका स्वभाव हो चला है। ऐसी स्थिति में सारा दोष उसी के माथे मढ़ देना बहुत बड़ी भूल होगी। दुर्भाग्य से हमारी बुर्जुआ पीढ़ी वही भूल कर रही है।

**रोग की जड़ कहाँ है ?**—अब विचारणीय यह है कि इस भयंकर संक्रामक रोग की जड़ कहां है ? इसके लिए सबसे पहले युवा पीढ़ी का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करना अनिवार्य होगा।

मानवीय कार्य व्यापार का कारण चेतन सत्ता (जीवात्मा) को स्वीकारना एक वैज्ञानिक तथ्य है। इच्छा, द्वेष, प्रयत्न सुख, दुःख, ज्ञान—ये ६ जीवात्मा के स्वाभाविक गुण हैं। मानव जाति के संदर्भ में इन्हीं की अभिव्यक्ति मूल प्रवृत्तियों (instincts) द्वारा होती है। प्रसिद्ध मनोविश्लेषण वादी मैंड्रूगल के अनुसार ये चौदह (पलायन, युगुत्सा, निवृत्ति, पुत्रकामना, शरणागति, कामप्रवृत्ति, जिज्ञासा, दैन्य, आत्म प्रदर्शन, सामूहिकता, भोजनान्वेषण, संग्रह वृत्ति, रचना वृत्ति और ह्रास)हैं। पूर्वजन्म के कार्य, वंशानुक्रम और बाह्य वातावरण (शिक्षा व सामाजिक संरचना) पर ही इनकी तीव्रता और विकास की दर आधारित है। भिन्न-भिन्न मूल प्रवृत्तियों की तीव्रता आयु पर भी मुख्यतः आधारित है। जैसे बाल्यावस्था में जिज्ञासा की तीव्रता सबसे अधिक और बुढ़ापे में सबसे कम रहती है। यौवन (१७ से ३५ लगभग) में जो प्रवृत्तियां सबसे अधिक विकसित और तीव्र रहती हैं, वे—काम प्रवृत्ति, युयुत्सा, रचनावृत्ति, आत्म प्रदर्शन और ह्रास हैं। इनसे संबद्ध संवेग (allied emotions) कामुकता, क्रोध, सृजनशीलता, आत्माभिमान और आमोद हैं। वर्तमान में महाविद्यालयीन छात्र जीवन में छात्र छात्राओं का परस्पर आकर्षण, छुरे बाजी करना, स्वयं को बड़ा दिखाने को



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुछ भी हानि करना, अपने से बड़ों की खिल्ली उड़ाना—उपरोक्त संवेगों में अनियंत्रण के ही सहज लक्षण हैं।

पशु और मानव में एक नैसर्गिक अंतर है। पशु का जीवन मूल प्रवृत्तियों से ही संचालित होता है, किन्तु सभ्यता के विकास और ह्रास ने यह सिद्ध कर दिया है कि मानव की मूल प्रवृत्तियाँ परिवर्तनशील हैं और वह अपनी अतिरिक्त विशिष्टता 'विवेक' (विचार-शक्ति) के द्वारा उन्हें संचालित कर सकता है। यही विवेक उसे अपने स्वाभाविक स्तर से ऊँचा उठाने के लिए प्रेरित करता है। विश्व की सारी आचार संहिताओं और नीति शास्त्रों का उद्देश्य इन्हीं मूल प्रवृत्तियों पर नियंत्रण करना रहा है। सांस्कृतिक बदलाव के साथ-साथ आचार संहिताओं में भी समयानुकूल परिवर्तन होता रहा है। और धीरे-धीरे ये मानवीय स्वभाव के सापेक्ष होती चली गईं। फलतः ये ही मानव प्रतिपादित आचार नीतियाँ और नियम अपने अनियमित बदलाव के कारण रूढ़ियाँ, मान्यताएं और परंपराएं बनकर रह गईं। त्रुटि यहीं से शुरु हुई। आज की समूची मानवकृत आचार संहिता (रूढ़ियाँ-परंपराएं) सर्वथा अवैज्ञानिक और तर्क हीन प्रतीत होने लगी हैं।

मनोवैज्ञानिक जहाँ मूल प्रवृत्तियों के प्रकाशन की असंयत मुक्तता को व्यक्ति और समाज के लिए विनाशकारी मानते हैं वहीं इनके अवदमन (Repression) को भी उससे कहीं अधिक बुरा मानते हैं। वस्तुतः मूल प्रवृत्तियाँ कभी नष्ट नहीं होतीं और न ही इन्हें समूल नष्ट करने का प्रयत्न करना चाहिए। आज की समूची परंपरावादी कपोल कल्पित नैतिकता (पौराणिकता) इनके अवदमन के साधन के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। ये बुरा है—इसे मत करो' 'वो मत करो', 'उसे भी मत करो' आदि अनेकों मत करो की लक्ष्मण रेखाएं आज के नवयुवक के सामने खींची जाती हैं। वह ऐसा करें क्यों नहीं ? और न करें तो क्या करें ? ऐसा कोई भी तर्क संगत और संतोषप्रद उत्तर पुरानी पीढ़ी के पास नहीं है। यदा कदा उत्तर दिया भी जाता है तो—पुराण, रामायण, कुरान, बाइबिल, महावीर, बुद्ध आदि के रटे रटाए उद्धरणों में। किन्तु नई पीढ़ी उद्धरण नहीं प्रयोगात्मक सिद्धि चाहती है। शराबी पिता हर बार नशा उतरने पर अपने बेटे को सिगरेट न पीने की सलाह दे, या अपनी ही शिष्याओं पर गलत दृष्टि रखने वाला अध्यापक अपने छात्रों को संयम का उपदेश रटावे—तो सर्वथा अर्थ हीन होगा। जितने उपदेशक बड़े, जितनी मर्यादाएं बढ़ी, नैतिक मान्यताएं बढ़ीं—उतना ही अनाचार पनपा। वस्तुतः मर्ज बढ़ता ही गया, ज्यों-ज्यों दवा की।

वर्तमान में सारी युवा पीढ़ी एक बहुत बड़े अंतर्द्वन्द से गुजर रही है। सैकड़ों सालों की आचार संहिता ने उसके अंतर्मन में बहुत भीतर एक संस्कार जन्य समझौता वादी परंपरा (Compromising Traditions) स्थापित कर दी है। किन्तु पिछले कुछ दशकों में विज्ञान और तकनीकी की आश्चर्य जनक प्रगति से उसके अन्दर ही इस आचार संहिता के विरोध में एक प्रतिक्रियात्मक चेतना (Reactionary spirit) क्रियाशील हो गई। संस्कार जन्य परंपरा का समर्थन और प्रोत्साहन मूल प्रवृत्तियों का अवदमन करने वाली मान्यताएं कर रही हैं और प्रतिक्रिया का समर्थन स्वतः ही मूल प्रवृत्तियों से होता है। फलतः समूहमन की सतह पर इस प्रतिक्रिया की तीव्रता अधिक हो चली है। उदाहरणार्थ-सारे शरीर को ढंकने, यहाँ तक कि घूँघट और बुरकों की परंपरा से ठीक उल्टी अधिक से अधिक अंग प्रदर्शन की फैशन चल उठी है। सामान्य जीवन में भी देखा जा सकता है कि जिस जगह तख्ती टंगी है "यहाँ सायकिल रखना मना है वहाँ सबसे अधिक सायकिलें मिलेंगी। जहाँ लिखा हो 'यहाँ पेशाब करना मना है वहाँ भीड़ लगी मिलेगी। यह केवल अनुशासन हीनता नहीं अवदमन की प्रतिक्रिया है। तात्पर्य यह कि युवा पीढ़ी वर्तमान की अवदमनकारी नैतिकता को और अधिक बर्दास्त करने के लिए तैयार नहीं।

**क्रांति की बातें करना जितना आसान है काम करना उतना ही कठिन। युवा शक्ति को एक युवक ने पुकारा है पर पुकारने वाले और पढ़ने वाले धर्म के लिए जब तक बलिदान नहीं देंगे, तब तक कुछ भी न हो सकेगा। —संपादक**

आज के किसी भी साहित्य, कला, सिनेमा या व्यावसायिक पत्रिका के विज्ञापन की सफलता का सीधा सम्बन्ध अश्लीलता और नारियों के अंग प्रदर्शन से है। यह समूह मन में नारी के प्रति सामाजिक मान्यताओं की अवदमित प्रतिक्रिया (Supressed Reaction) नहीं तो और क्या है ? केवल यही।

**बहुत बड़ा खतरा**—प्रसिद्ध मनोविश्लेषण रीवर, ड्रेवर आदि के मान्यता है कि यदि किसी मूल-प्रवृत्ति के प्रकाशन में बाधा डाली जाए तो उसका संबद्ध संवेग तत्काल प्रभावशाली हो जाता है। उदाहरणार्थ युयुत्सा का प्रकाशन क्रिया शील संघर्ष है यदि इसमें बाधा डाली



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गई उसका संवेग 'क्रोध' उत्पन्न होता है। यह सही है किन्तु इसके साथ ही, यह भी सही है कि यदि किसी संवेग को प्रोत्साहन मिले तो मूल प्रवृत्ति भी विकसित व तीव्र हो जाती है। वर्तमान स्थिति इन दोनों का गुणनफल है जो सबसे खतरनाक है। आचार संहिता मूल प्रवृत्तियों के प्रकाशन में बाधा डालती है। फलतः संवेग उत्पन्न हो रहे हैं और सम्पूर्ण सामाजिक संरचना इन संवेगों को प्रभावशील बनाने में सहायक है। जैसे किसी लड़के को लड़की से बात चीत करना, मिलना-जुलना—अनैतिकता या चरित्रहीनता माना जाता है। इससे जिज्ञासा और काम प्रवृत्ति में बाधा पहुंचती है। परिणामतः कौतूहल और कामुकता के संवेग जागृत होते हैं ऐसी स्थिति में सारी सामाजिक व्यवस्था (भड़कीली फैशन, अश्लील साहित्य, सिनेमा, लड़के-लड़कियों के कार्यक्षेत्रों में अनुचित स्वच्छंदता आदि) इन संवेगों को प्रोत्साहित करने में सहायक हैं। परिणामतः व्यभिचार चक्रवृद्धि से पनप रहा है। शहरी व्यवस्था का सबसे महत्वपूर्ण अंग, युवा संदर्भों में, शिक्षा व्यवस्था भी है। जहां शिक्षा का उद्देश्य मानव की अंतर्निहित घनात्मक शक्तियों का विकास और प्रकाश होना चाहिए, वहां लार्ड मेकाले की 'बाबू' बनाने वाली शिक्षा पद्धति थोपी गई है। यथार्थतः यह शिक्षा नहीं अपितु बेरोजगार बनाने वाला, जिज्ञासा, प्रयोगशीलता और सृजनात्मकता का गला घोंट कर, निराशा कुण्ठा, उच्छृंखलता और अनुशासनहीनता का षडयंत्रकारी प्रशिक्षण है। परिणामतः नई पीढ़ी एक मानवीय अनुभूति सम्पन्न सामाजिक संरचना के निर्माण और मानसिक मुक्तता के लिए वर्तमान नीति शास्त्र और सामाजिक मर्यादाओं को तहसनहस करना चाहती है। किन्तु किसी विशेष मान्यता (वैचारिक प्रामाणिकता) के आधार पर ही कुछ बनाना या कुछ मिटाना हमारे देश की संस्कारगत परंपरा है। अतः ऐसी स्थिति में बुरा कोई भी विचारधारा (मान्यता को युवा पीढ़ी स्वीकार कर लेगी जो इस अवदमनकारी नीति शास्त्र के ठीक विरोधी हो। दूसरे शब्दों में प्रत्येक तत्कालीन मान्यता को अस्वीकार कर देने की किसी अन्य मान्यता से बंध जाएगी। किसी देश के सांस्कृतिक इतिहास का सबसे भ्रामक और नाजुक मोड़ यही होता है, जहाँ आज हमारी युवा पीढ़ी खड़ी है।

हमारी सम्पूर्ण सांस्कृतिक चेतना के सामने एक बहुत बड़ा खतरा पैदा हो गया है। इसका लाभ कोई भी पड़यंत्र कारी विचारधारा उठाए यह स्वाभाविक है। इस अवदमन (Supression) के विरोध में एक सम सामयिक (किन्तु अवैज्ञानिक) विचार धारा द्वारा युवा पीढ़ी की प्रतिक्रियात्मक चेतना का समर्थन और मूल प्रवृत्तियों के संवेगों को प्रोत्साहन देने की कुटिलतापूर्ण चतुराई रजनीश कर रहे हैं। यौवन का उनकी ओर आकर्षित हो जाना स्वाभाविक ही है। स्वाभाविकता (Naturatity) के नाम पर विकार ग्रस्त मानव को पशुता की ओर अभिमुख करने के विनाशकारी प्रयास में यह महाशय भगवान बन बैठे हैं। बाल योगेश्वर, आनंदमार्गी, ब्रम्हा कुमारी आदि लगभग सभी एक अंतर्राष्ट्रीय षड़यंत्र के अंग हैं जिन्हें अमेरिका जैसे पूँजीवादी भारत विरोधी देश से आर्थिक सहायता मिलती रही है।

दूसरी, ५०-६० वर्ष पूर्व प्रचलित हुई एक अन्य विचारधारा है कम्यूनिज्म। इसके अनुयायी, देश द्रोही, मार्क्स को अपना धर्म गुरु, पेकिंग को तीर्थ स्थल और चेयरमैन माओ को अपना नेता मानते नहीं हिचकिचाते। नई पीढ़ी-बहुत बड़े पैमाने पर इनकी ओर आकृष्ट है। आज की सर्वथा-आर्थिक सामाजिक-धार्मिक असमानता परक व्यवस्था के अन्याय और अत्याचार के विरोध की प्रतिक्रिया का यह लक्षण है। कम्यूनिज्म की आज की विचार धारा आज की सारी आचार संहिता का विरोध करती ही है साथ ही सारे शाश्वत नैतिक मूल्यों को नकारने की चेतना भी जागृत करती है।

चार्वाक, फ्रायड, मार्क्स, माओ आदि के ये शिष्य देश की युवा पीढ़ी की सांस्कृतिक हत्या के लिए बहुत बड़े खतरे हैं। यदि परिस्थितियाँ इसी प्रकार रहें तो—अनेकों रजनीश और भगवान पैदा हो जायेंगे।

**एक मात्र हल**—उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आज एक ऐसी सार्वभौम और निरपेक्ष आचार संहिता की आवश्यकता है जिसमें मूल प्रवृत्तियों का अवदमन नहीं किसी घनात्मक दिशा में परिवर्तन (सन्मार्गान्तरी करण) हो जाये, साथ ही आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक समानता पर आधारित ऐसी समाज रचना का निर्माण ज़रूरी है जो मूल प्रवृत्तियों के संवेगों की उत्पत्ति के अवसर से रहित और उनकी तीव्रता के ह्रास में सहायक हो। मनोविज्ञान की भाषा में इसे शोधन (Sublimation) और विलियन (Inhebition) का मिला जुला रूप कहेंगे।

मुझे इन शब्दों को लिखते हुए गौरव होता है कि हम, ऋषि दयानन्द के अनुयायियों के पास वह आचार संहिता और समाज रचना की सबसे परिमार्जित रूप रेखा है। जो इस खतरे से उबार कर आज की युवा पीढ़ी को सही दिशा दर्शन कर सकती है।

वेद या आर्यसमाज की आचार संहिता के तीन पहलू हैं—

(१) आत्म संयम (२) आत्म निर्देशन (३) समष्टिगत कर्त्तव्यों का पालन। आर्यसमाज का नियम है—'सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।

जहाँ वर्तमान की सारी आचार संहिताएं प्रवृत्तियों पर बाहरी नियंत्रण (अवदमन) करवाना चाहती हैं, वहीं वैदिक आचार संहिता उन्हें भीतर से नियंत्रित करने की पद्धति 'धियोयोनः प्रचोदयात्' के उद्घोष के साथ प्रतिपादित करती है। यही दोनों में मौलिक अन्तर है।

महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है—'जैसे विद्वान सारथी घोड़ों को नियम में रखता वैसे मन आत्मा को खोटे कामों में खींचने वाले विषयों में विचरती हुई इन्द्रियों के निग्रह में रखने का प्रयत्न सब प्रकार से करे।' यही आत्म संयम की बुनियाद है। आत्म निर्देशक का उपाय उन्होंने बड़े सीधे शब्दों में लिखा 'जो-जो पराधीन कर्म हैं उस-उस का प्रयत्न से त्याग और जो-जो स्वाधीन कर्म हैं उस-उसका प्रयत्न से सेवन करें।' साथ ही 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।' वेद कहता है 'दुरतानि परासुव यद् भद्रं तन्न आसुव।' आत्म संयम और आत्म निर्देशन के फलस्वरूप विवेक का विकास होता है। विवेक शील मानव में समष्टिगत कर्त्तव्य-पालन की चेतना का उदय होना स्वाभाविक ही है। अतः आचार संहिता का तीसरा पहलू 'प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए' के रूप में व्यक्त होता है। विवेक से मूल प्रवृत्तियों का अवदमन नहीं, नियंत्रण और सन्मार्गान्तिरीकरण हो जाता है।

वैदिक समाज रचना में युवा पीढ़ी को अपनी आयु के २५ वर्ष तक ब्रह्मचारी रहना पड़ता है। इस अवस्था में वह आचार्य कुल (शिक्षालय) में पूर्ण संयम और सात्विकता के साथ अपनी मूल प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखता हुआ, शिक्षा प्राप्त करता है। वस्तुतः गुरुकुल में विद्यार्थी इनका अवदमन नहीं विलयन (inhibtion) और सन्मार्गान्तिरीकरण करने का प्रशिक्षण लेता है। इस व्यवस्था में उसके संवेगों की उत्पत्ति और प्रोत्साहन का कोई प्रश्न ही नहीं उठता, क्योंकि वहां का संपूर्ण वातावरण ही अत्यन्त सरल, शुद्ध, पवित्र, शान्त, सादगी एवं सात्विकतायुक्त रहता है। ८ वर्ष की आयु से ही बालक को अनिवार्य रूप से गुरुकुल में भेजना पड़ता है। लड़के व लड़कियों की पाठशालायें प्रथक-प्रथक, तथा लड़कों के साथ अध्यापक एवं लड़कियों के साथ आध्यापिकाएं रहेंगी।

इस शिक्षा की शुरुआत 'दीक्षा' से होती है। आचार्यों के निर्देश एवं अपनी रुचि से बालक 'दीक्षा' लेता है, अर्थात्, अज्ञान, अभाव, व अन्याय में से किसी एक को दूर करने का व्रत लेता है। उसे अपने जीवन का एक निश्चित ध्येय बनाना पड़ता है। ऐसी स्थिति में, यम, नियम आसन प्राणायाम के साथ संध्या, यज्ञ करने से उसकी प्रबलतम मूल प्रवृत्ति का निर्बल हो जाना स्वाभाविक ही है साथ ही जिज्ञासा, युयुत्सा व रचना वृत्ति का साथ, शोधन हो जाता है। वह इनका घनात्मक उपयोग लेने लगता है।

समाज में अन्याय अत्याचार अत्याचार से लड़ने के लिए, युयुत्सा के संवेग क्रोध का शोधन 'मन्यु' (घनात्मक आवेश) का आह्वान करके किया जाता है। काम प्रवृत्ति का सन्मार्गान्तिरीकरण, उच्चस्तरीय कला साहित्य, संगीत सृजन में होता है। जिज्ञासा के शोधन का परिणाम वेद में से ही गूढ़ दार्शनिक तत्वों की खोज और विज्ञान की चरमोन्नति होता है। सृजनशीलता की वृत्ति को—कृषि एवं तकनीकी उन्नति के रूप में शोधित किया जाता है। ह्रास प्रवृत्ति को सहन शक्ति में वृद्धि एवं मुस्कारते हुए संघर्ष कर सकने में रूपान्तरित किया जाता है। पुत्र कामना का शोधन बुराइयों से घृणा व सामूहिकता का शोधन कुशल संगठनात्मकता हो सकता है। पलायन का रूपान्तरण बुरे कामों के बुरे परिणामों का डर, आत्म प्रदर्शन का नेतृत्व में—शरणागति का—असहायों की निर्धनों की सेवा के लिये, दैन्य का ईश्वरोपासना के लिए किया जाता है। संमृद्ध वृत्ति का शोधन—विविध-ज्ञान और प्रवृत्तियों के संग्रह तथा, योजनान्वेषण की प्रवृत्ति काधन-ईमानदारी से उद्योगशीलता में किया जाता है। इस प्रकार सारी मूल प्रवृत्तियों का शोधन हमारी इस आश्रम व्यवस्था द्वारा हो जाता है।

उपरोक्त विवेचन के बाद मैं दावे के साथ कह सकता हूं आज के तमाम आधुनिक मनोविश्लेषण वादियों के सामने, कि ऋषि दयानन्द की, वेद की समाज रचना शत प्रतिशत मनोवैज्ञानिक है।

**हमें क्या करना है**—अभी सैद्धान्तिक पुष्टि की गई। किन्तु सबसे ज्यादा विचारणीय और महत्वपूर्ण यह है कि इस मनोवैज्ञानिक आचार संहिता का व्यवहारीकरण कैसे किया जाय? स्पष्ट है कि आर्यसमाज के जीवन-काल की यह सबसे बड़ी चुनौती है, जिसका मुकाबला हमें करना है। इसके निम्न आयाम हो सकते हैं।

१—सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक क्षेत्र में, वर्तमान की सारी मनगढ़न्त आचारसंहिता के विरुद्ध तीव्र नकारात्मक चेतना की जाग्रति एवं वैकल्पिक व्यवस्था के रूप में वर्ण-आश्रम व्यवस्था पर आधारित समाज रचना के सिद्धान्त के क्रियान्वयन के लिए क्रांतिकारी भूमिका सभी आर्य जन निभाएं।

२—'वेद' को गुरुकुल और यज्ञ वेदियों, समाज मन्दिरों से लेकर आम जनता तक प्रचारित-प्रसारित करने



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में योगदान दें। उन नाम मात्र की संख्या वाले सभी संगठनों संस्थानों का सक्रिय सहयोग करें जो 'वेद' के संदेश को घर-घर में पहुंचाने को प्रयत्नशील हैं।

३—आम जनता की भाषा और शैली में आर्य साहित्य का सृजन प्रकाशन और वितरण हो।

४—ब्रह्मचर्य के बारे में समाज में फैली अनर्गल धारणाओं को नष्ट कर उसका वास्तविक रूप प्रतिपादित करें। साथ ही नगरों में ब्रह्मचर्य केन्द्र समाजें संचालित करें। योग प्रशिक्षण शिविर भी लगाए जायें।

५—'युवा' शब्द का अर्थ ही 'जोड़ना-तोड़ना' होता है, वह स्वभाव से ही कुछ बनाना और कुछ मिटाना चाहता है। आर्यसमाज का दायित्व है कि वह जहां उसकी रचनात्मक वृत्ति को प्रकाशन का अवसर दे वहीं उसे मिटाने के लिए भी कुछ काम दे—इसके निम्न प्रयास हो सकते हैं—

(अ) जातिपांति तोड़ने का एक तीव्र आन्दोलन प्रारम्भ हो। इसकी शुरूआत में कम से कम आर्यसमाज के प्रत्येक अधिकारी को अपनी संतानों का अंतर्जातीय विवाह करना अनिवार्य। अंतर्जातीय विवाह करने वाले युवक-युवतियों को प्रोत्साहन दिया जाय, आर्यजगत् उनका सम्मान व अभिनन्दन करे। स्मरणीय रहे, ये विवाह पूर्ण नैतिक हों।

(ब) दहेज प्रथा के विरोध में व्यापक पैमाने पर और सशक्त कदम उठाए जाएं, हर संभव प्रयत्न द्वारा इसका विरोध हो, दहेज लेने वाले स्वार्थी पुत्र विक्रेताओं का बुरी तरह सामाजिक बहिष्कार और तिरस्कार हो। इस कार्य में नई पीढ़ी को आगे लाया जाए।

(स) देश द्रोही तत्वों ('मार्क्समाओ' -ाद ईसाइयत, सम्प्रदायवादी पूंजीवादी और फासिस्ट) आदि के विरोध में तीव्र क्रांति (वैचारिक) का कार्यक्रम आर्यसमाज (दे) इनके सर कुचलने में शासन का भी सहयोग करें।

(द) युवा पीढ़ी की रचनावृत्ति को प्रोत्साहित करने के लिए आर्यसमाजें छात्रों की विचार गोष्ठियां, वाद-विवाद-भाषण प्रतियोगिताएं, साहित्यिक सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद आदि नियमित रूप से चला कर पुरस्कार में आर्य-साहित्य बांटें। इन प्रतियोगिताओं के नाम, दयानन्द श्रद्धानन्द आदि से भी रखे जा सकते हैं। जैसे—'महर्षि दयानन्द भाषण माला आदि।

(व) समय-समय पर ग्राम यात्रा, वनभोज, सहभोज (हरिजनों आदि के साथ) सफाई अभियान, गांवों में जाकर श्रमदान वपन आदि आयोजित किये जायें, इससे सामूहिकता की प्रवृत्ति का घनात्मक लाभ मिल सकता है।

(क) आर्य जगत् के युवा लेखकों को प्रोत्साहन एवं उनके साहित्य के प्रकाशन की समुचित व्यवस्था हो। समाज के ही नवोदित वक्ताओं, कलाकारों, संगीतज्ञों आदि को प्रोत्साहित करने हेतु भिन्न स्तरों पर प्रतियोगिताएं आयोजित हों, जिससे आत्म प्रदर्शन, जिज्ञासा, रचना वृत्ति आदि मूल प्रवृत्तियों का शोधन हो सकें।

६—आज समाज में गुरुकुलों की कोई प्रतिष्ठा नहीं है। इसके दो मुख्य कारण हैं। पहला—गुरुकुलों के शैक्षणिक जीवन का व्यावहारिक जगत् के वर्तमान संदर्भों से कोई तारतम्य नहीं। दूसरे—गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त स्नातक या आचार्य तक के भविष्य की उज्ज्वलता या सम्पन्नता पूर्णतः संदिग्ध रहती है। हर पिता (भले ही आर्यसमाजी) अपनी संतानों को इन्जीनियर, डाक्टर आदि बनाना चाहता है। समाज मंदिर में वह भले ही कुछ भी कहे—गुरुकुल में भेजने का मतलब परोक्षतः अंधकारमय भविष्य मानता है। अतः इन गुरुकुलों में जहां प्राचीन सांस्कृतिक, साहित्य-नैतिक शिक्षा अनिवार्य हो वहीं, आधुनिक तकनीकी, विज्ञान चिकित्सा आदि की व्यवस्था भी हो। उनकी उपाधियां विश्वविद्यालयों के समकक्ष हों। साथ ही गुरुकुलों की शिक्षा को आर्थिक व्यय से मुक्त करने के लिए विद्यार्थियों की शिक्षा व्यवहारिक और रचनात्मक भी हो जिससे वह अपनी आजीविका और शिक्षा का व्यय स्वयं उपार्जित करें।

७—आज बहुत बड़ी विडम्बना डी० ए० वी० कालेजों की है। यह आज के अनैतिक-फैशन परस्त कालेजों से किसी भी प्रकार कम नहीं। इनमें वह सब होता है जो अन्य आधुनिक कालेजों में होता है और वह कुछ भी नहीं होता जो 'दयानन्द एंग्लोवैदिक' नाम के साथ होना चाहिए। आर्यसमाज के अधिकारी इन सबको एक ही संचालन समिति से सम्बद्ध करके इनमें नैतिक-शिक्षा, नियमित संध्या, साप्ताहिक यज्ञ, समय-समय पर वैदिक विद्वानों के व्याख्यान सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षाएं आदि जैसे भी सम्भव हो अनिवार्यतः कराने का यत्न करें। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य आर्यसमाज को करना है।

८—आर्यसमाजों की कार्यकारिणियों में छात्र वर्ग को नेतृत्व का पूरा अवसर दिया जाये, जिससे उसकी आत्म-प्रदर्शन की प्रवृत्ति का भी शोधन हो जाए, वह कुछ सीख भी सके।

ये कुछ बिन्दु हैं जिनके क्रियान्वयन का यत्न किया जा सकता है किन्तु अत्यन्त खेद के साथ लिखना पड़ता है कि आर्यसमाज के पदाधिकारी ठेकेदार, स्वयं को ही ऋषि का दत्तकपुत्र समझने वाले बगुलाभगत भीड़-भाड़ इकट्ठी करके अपनी जय-जयकार करवाने और प्रत्यक्षतः राजनीति को कोसकर पिछले दरवाजे से प्रतिक्रियावादी दलों से सांठ-



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गांठ कर पवित्र यज्ञ वेदी को संसद् या विधान सभा भवनों से जोड़ने में इतने मशगूल हैं कि क्या करना इन्हें युवा पीढ़ी से 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' के नाम की खाने वाले इन नेताओं के बेटे-बेटियां आधी रात को क्लबों-नाचघरों में आसानी से मिल जाएंगे। और ये हैं कि शताब्दी समारोह तक में ऋषि विरोधियों को दुकान (साहित्य की) लगाने देते हैं।

आर्य वीरदल की रट लगाने से या १०० लड़कियों को घोड़े पर सवार करके नाटक करने से रजनीश जैसे अनेकों भीषण षड्यंत्रों से नहीं बचा जा सकता। आज की स्थिति का सूक्ष्म अध्ययन युवा पीढ़ी का मनोविश्लेषण करके कोई ठोस कदम यदि आर्यसमाज ने नहीं उठाया तो उसे अपना भविष्य खुद सोच लेना चाहिए।

ये नेता नामधारी लोग कभी नहीं सोचेंगे—न ही इनसे कोई आशा की जा सकती है। अतः दयानन्द के नौजवान सैनिकों को अत्यन्त दृढ़ता के साथ उठ खड़े होना है। अब वह समय आ चुका है जब 'सायण और दयानन्द' को प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लेने वाले इन चतुर नाटककारों के मायाजाल को नष्ट कर, दयानन्द के सिद्धान्तों के लिए जीवन यज्ञ करने वाले, वेद धर्म के संदेश को आम भारतीय तक पहुंचाने में प्रयत्नशील ऋषि के सच्चे अनुयायी आर्यजनों के मार्ग दर्शन में नौजवान पीढ़ी आगे आए।

मैं इस लेख के माध्यम से आर्यसमाज की तमाम युवा पीढ़ी को आव्हान करता हूं कि अगर आर्यों की तरह जीना है तो आग की तरह जलना—गर्मी और रोशनी देना सीखो। याद रखो वेद की ऋचा—'अग्निनम् अग्निः समिध्यते'—आग से आग जलती है।

## श्रद्धांजलियां!

महर्षि दयानन्द मानव जाति की एकता के प्रबल समर्थक थे। आर्यसमाज ने गदर से निराश भारत को एक नया जीवन दिया। —भारत के राष्ट्रपति श्री अहमद

आर्यसमाज के कार्यक्रम की पूर्ति में ही आज सारा राष्ट्र और शासन लगा है। —उपराष्ट्रपति श्री जत्ती

महर्षि दयानन्द क्रान्तिकारी और युग द्रष्टा थे। सारा राष्ट्र उनके प्रति आभारी रहेगा।

—श्री नारायणदत्त तिवारी मुख्यमन्त्री उत्तर प्रदेश

महर्षि दयानन्द के चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सारा भारत अनुभव करता है कि वे महानात्मा, युग-द्रष्टा और क्रान्तिकारी थे।

—श्री कमलापति रेलमन्त्री भारत

## ऋग्वेद के द्वितीय खण्ड का विमोचन

नई दिल्ली। होली के पर्व पर दयानन्द संस्थान द्वारा सूर्य नगर में आयोजित एक समारोह में वेद भाष्य के अन्तिम खण्ड का विमोचन करते हुए नैपाल के राजदूत श्री कृष्ण बाम मल्ल ने कहा कि—वेद-भारत और भारती से हमारे इतने गहरे प्राचीन सम्बन्ध हैं जिन्हें संसार की कोई शक्ति हम से पृथक नहीं कर सकती।

आप ने कहा कि—'वेद' ज्ञान की पवित्र गंगा है जिन से समस्त ज्ञान-विज्ञान भूमंडल में फैला है। और मानवता का सच्चा संदेश वेद द्वारा ही संसार को प्राप्त हुआ है।

आप ने कहा कि संस्थान ने इस प्राचीन निधि का प्रकाशन और प्रसार कर प्रत्येक हिन्दू पर ही नहीं अपितु सभी बुद्धिजीवियों पर उपकार किया है। आज हम अपने घर में परमात्मा की इस अमृत वाणी को स्थापित कर पुण्य प्राप्त कर सकते हैं।

इस अवसर पर सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री बनारसी सिंह, साहित्यकार श्री क्षेमचन्द्र 'सुमन' व श्री रामकृष्ण भारती ने भी अपने विचार व कविता पाठ किया।

संस्थान की प्रधान मंत्री पंडिता राकेश रानी ने ऋग्वेद का द्वितीय खंड विमोचन के लिए माननीय राजदूत महोदय की सेवा में प्रस्तुत करते हुए वैदिक साहित्य भी उन्हें भेंट किया। और कहा कि १५,५०० की संख्या में प्रथम बार वेद भाष्य का प्रकाशन यह सिद्ध करता है कि देश में 'वेद' के प्रति कितनी श्रद्धा है। आप ने संस्थान की भावी योजनाओं की भी घोषणा की।

## पं० धर्मदेव जी का संन्यास

पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड ने २८ फरवरी को ९३ वर्षीय आर्यसमाज के प्रमुख नेता महात्मा आनन्द स्वामी जी से वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर में संन्यास ग्रहण किया।

इस अवसर पर धार्मिक संस्थाओं, आर्यसमाजों, गुरुकुलों तथा अन्य शिक्षा संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

पं० धर्मदेव जी, जो एक प्रसिद्ध वैदिक भाष्यकार तथा विश्व वेद परिषद् के अध्यक्ष हैं, अब धर्मानन्द सरस्वती के नाम से पुकारे जाएंगे।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—प्रो० रत्नसिंह

# आर्य समाज का चतुर्थ नियम-४

# सत्य क्या : असत्य क्या ?

★★★

सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज से पृथक् इसके जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। समाज में रहता हुआ वह कई प्रकार के समूह बना लेता है। एक दृष्टि से सभी समूहों को दो वर्गों में विभाजित किया जाता है—स्व समूह और पर समूह स्व समूह। के सभी सदस्य अपने को उस समूह के अन्दर रहने वाले मानते हैं और पर समूह के सदस्यों को अपने से बाह्य समझते हैं। उनके प्रति उपेक्षा, तिरस्कार, विरोध, भय, रोष और कभी-कभी घृणा रखते हैं। अपना परिवार, अपनी जाति और अपना मजहब स्व समूह है। पराया परिवार, परायी जाति और पराया मजहब पर समूह है। स्व समूह और पर समूह में खींचातानी रहती है। इसी को तनाव या संघर्ष (Conflict) कहते हैं। सामाजिक संघर्ष को बढ़ावा देने में पूर्वाग्रह (prejuclice) का बहुत बड़ा हाथ रहता है। इसके कारण एक स्व समूह के लोग अपने को पर समूह के सदस्यों से श्रेष्ठ और अधिक बुद्धिमान मानने लगते हैं। अपनी निकृष्टतम वस्तु भी श्रेष्ठ है और पराई श्रेष्ठतम वस्तु भी निकृष्ट है। इसी भावना से समाज में कलह व अशान्ति उत्पन्न हो जाती है। मनुष्य अपना विवेक खो बैठता है। सामूहिक तनाव की शान्ति के अनेक उपाय समय-समय पर भिन्न-भिन्न विचारकों ने सुझाये हैं। हमारी सम्मति में स्थायी शान्ति प्राप्त करने का स्वर्णिम उपाय आर्यसमाज के प्रस्तुत नियम में बतलाया गया है। बिना पूर्वाग्रह व पक्षपात के जो भी सत्य हो (चाहे वह अपने अनुकूल हो वा प्रतिकूल) उसे ग्रहण करना चाहिए और असत्य का परित्याग कर देना चाहिए।

इस नियम के होते हुए भी कई अविवेकी पुरुषों ने आर्यसमाज पर हठ, दुराग्रह व पक्षपात का मिथ्या रोपण किया है। इन लोगों के विचार में आर्यसमाजी अपनी अपनी कहता है, दूसरे की कभी नहीं सुनता और तार्किक होने के कारण अपनी असत्य बात को सत्य और दूसरे की सत्य को असत्य सिद्ध कर देता है। इन आक्षेपकर्ताओं का ध्यान हम महर्षि दयानन्द जी के कतिपय वाक्यों की ओर आकृष्ट करना चाहते हैं, जिनके आधार पर प्रस्तुत नियम की रचना की गई है। महर्षि दयानन्द जी को सत्य अति प्रिय है, इसीलिए अपने अमर ग्रन्थ का नाम 'सत्यार्थ प्रकाश' रखा है। इस सन्दर्भ में वे लिखते हैं, 'मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है।' महर्षि दयानन्द ने कहीं भी अपने को साम्प्रदायिक पैगम्बरों की भांति पूर्ण ज्ञानी नहीं कहा है। पूर्ण ज्ञानी केवल ईश्वर है, मनुष्य अल्पज्ञ व अल्पशक्ति वाला है। इसलिए उससे भूल हो सकती है। इसी भावना से महर्षि लिखते है—'इस ग्रन्थ में जो कहीं-कहीं भूल चूक से अथवा शोधने तथा छापने में भूल चूक रह जाय उसको जानने जनाने पर जैसा वह सत्य होगा वैसा ही कर दिया जायेगा' कितनी निरभिमानता व निष्पक्षता थी महर्षि में ? हमें इस बात पर गर्व है कि इन सौ वर्षों में अभी तक महर्षि के सिद्धान्तों में कोई भी व्यक्ति एक भी त्रुटि सिद्ध नहीं कर सका। महर्षि मानव स्वभाव के दुर्बल पक्ष से पूर्ण परिचित थे। इसलिए वे लिखते हैं—'और जो कोई पक्षपात से अन्यथा शंका खण्डन वा मण्डन करेगा, उस पर ध्यान न दिया जायेगा। हां, जो मनुष्य मात्र का हितैषी होकर कुछ जनावेगा उसको सत्य-सत्य समझने पर उसका मत संगृहीत होगा।' महर्षि दयानन्द ने स्पष्टतः इस तथ्य को स्वीकार किया है कि सभी मतों में विद्वान् हुए हैं। यह बात भिन्न है कि पक्षपात का परित्याग करने में वे कहां तक सफल हो सके हैं। महर्षि का कथन है, 'यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मतों में हैं वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो जो बातें सबके अनुकूल सबमें सत्य हैं उनका ग्रहण और जो एक दूसरे से विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्त्तें वर्त्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे। आर्य समाज पर पक्षपात का दोषारोपण करने वाले महानुभावों से निवेदन है कि वे गम्भीरता से महर्षि के इन वाक्यों पर विचार करें, 'यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उत्पन्न हुआ और बसता हूँ, तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर याथातथ्य प्रकाश करता हूँ वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मत वालों के साथ भी वर्तता हूँ । जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में वर्तता हूँ वैसा विदेशियों के साथ भी तथा सब सज्जनों को भी योग्य है । क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की स्तुति मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा, हानि और बन्ध करने में तत्पर होते हैं वैसे मैं भी होता, परन्तु ऐसी बातें मनुष्य पन से बाहर हैं ।' सत्य का गला घोंटने और स्वार्थ सिद्धि के लिए अनेक पाखण्डियों ने नये-नये मतों को जन्म देकर अपने को ईश्वर घोषित किया हुआ है । इस दुष्प्रवृत्ति का घोर विरोध करते हुए महर्षि कहते हैं 'मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है । यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त में प्रचलित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता ।'

आर्यसमाज पर हठ, दुराग्रह व पक्षपात के मिथ्यारोप का निराकरण करने के उपरान्त प्रस्तुत नियम में प्रयुक्त 'सत्य' पद के अर्थ पर विचार किया जाता है । प्रस्तुत नियम में सत्य के ग्रहण करने और असत्य के परित्याग करने का विधान है । ऐसा तभी सम्भव हो सकता है जबकि सत्यासत्य का बोध हो जाये । इसीलिए महर्षि लिखते हैं—'पक्षपात छोड़कर इसको देखने से सत्यासत्य मत सबको विदित हो जायेगा । पश्चात् सबको अपनी-अपनी समझ के अनुसार सत्य मत का ग्रहण करना और असत्य मत को छोड़ना सहज होगा ।'

लोकमत में जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही जानना सत्य और उसके विपरीत जानना असत्य कहलाता है । पुस्तक को पुस्तक और कलम को कलम जानना सत्य और विपरीत ज्ञान असत्य होता है । सत्य की यह परिभाषा अपूर्ण है । अनेक अवसर ऐसे आते हैं जब हम किसी वस्तु के वास्तविक रूप को जानते तो हैं परन्तु उसको वैसा कहते नहीं हैं । आत्मा और मन से जैसा जानते हैं ठीक वैसा वाणी से नहीं कह पाते । यह सत्य नहीं वरन् असत्य है । किसी व्यक्ति ने एक घटना को अपने नेत्रों से देखा है । वह उसका सही रूप जानता है और वैसा ही अन्य पुरुषों के सम्मुख मौखिक कहता है । परन्तु साक्षी के समय वैसा लिखकर देने के लिए तैयार नहीं है । ऐसे भी व्यक्ति मिलते हैं जो किसी पदार्थ के सही रूप को जानते हैं, ठीक वैसा ही कहते भी हैं और वैसा ही लिख कर दे भी देते हैं, परन्तु आचरण में वैसा नहीं लाते । 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है । वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है । एक व्यक्ति इस नियम को इसी रूप में कहता भी है और लिखता भी है, परन्तु इसे आचरण में नहीं लाता । इसलिये इस व्यक्ति को सत्यवादी नहीं कहा जा सकता । अतः सत्य की पूर्ण परिभाषा यह है—'जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य कहलाता है ।' 'सत्य भाषण जो कि तेरे आत्मा मन वाणी में है वह सत्य और जो इससे विपरीत हैं वह मिथ्या भाषण है ।' सत्य त्रिकालाबाधित होता है, वह तीनों काल में एक सा ही रहता है । दो और दो का योग सदैव चार होता है । अतः दो और दो का योग चार कहना सत्य और अन्यथा कहना असत्य है ।

सत्यासत्य की परिभाषा के बाद सत्य प्राप्ति के साधन का विवेचन आवश्यक है । राजनीति में आजकल प्रजातन्त्र पद्धति में सत्यासत्य का निर्णय बहुमत के आधार पर किया जाता है । ९९९ व्यक्तियों का एक विषय पर एकमत है परन्तु १००० व्यक्तियों का मत उसके विपरीत है । इस स्थिति में ९९९ व्यक्तियों के मत का कोई मूल्य नहीं भले ही विद्या में वे १००० व्यक्तियों से अधिक योग्यता रखते हो । आर्यसमाज को यह पद्धति मान्य नहीं है । एक सहस्र मूर्खों के मुकाबिले में एक विद्वान् की सम्मति अधिक मान्य है । प्रयोगशाला में एक वैज्ञानिक प्रयोग करके किसी निष्कर्ष पर पहुंचता है । दूसरा वैज्ञानिक भी उसी निष्कर्ष पर पहुंचता है । किन्तु इनके निष्कर्ष सर्वसाधारण की मान्यताओं से मेल नहीं खाते । क्या इस स्थिति में वैज्ञानिक इन लोगों के बहुमत के आधार पर अपने निष्कर्ष में परिवर्तन कर डालें ? यदि ऐसा होने लगे तो सारा वैज्ञानिक अनुसंधान एक उपहास के अतिरिक्त और जायेगा ?

सत्यासत्य का निश्चय करने के एक सरल व व्यावहारिक उपाय पर विचार करना यहां अभिप्रेत है । जैसा कि हम आरम्भ में लिख चुके हैं, मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । समाज में रहते हुए विचारों के आदान-प्रदान से वह अपने ज्ञान में अभिवृद्धि करता है । समाज से वह कुछ सीखता है और कुछ उसे सिखाता है । इसके



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिए शंका समाधान, वाद-विवाद तथा शास्त्रार्थ बड़े उपयोगी उपाय सिद्ध होते हैं। आर्यसमाज का प्रारम्भिक युग शास्त्रार्थ युग था। इसी का परिणाम था कि सर्व साधारण जनतावादी प्रतिवादी के तर्क सुनकर अपने ज्ञान में वृद्धि करती थी और बिना अधिक परिश्रम किये ही सत्यासत्य का निर्णय कर लेती थी। इस पद्धति की उपयोगिता के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द जी का विचार है—'जब तक वादी प्रतिवादी होकर प्रीति से वाद वा लेख न किया जाये तब तक सत्यासत्य का निर्णय नहीं हो सकता। जब विद्वान् लोगों में सत्यासत्य का निश्चय नहीं होता तभी अविद्वानों को महा अन्धकार में पड़कर बहुत दुःख उठाना पड़ता है। इसलिए सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद वा लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है।' 'यदि वादी प्रतिवादी सत्यासत्य निश्चय के लिए वाद प्रतिवाद करें तो अवश्य निश्चय हो जाये।' महर्षि ने अपने लेखन व भाषण में इसी पद्धति का अनुसरण किया है। अतः अपने अनुभव के आधार पर लिखते हैं—'जैसे मैं अपना या दूसरे मतमतांतरों का दोष पक्ष पात रहित होकर प्रकाशित करता हूं इसी प्रकार यदि सब विद्वान् लोग करें तो क्या कठिनता है कि परस्पर का विरोध छूट मेल होकर आनन्द में एक मत होकर सत्य की प्राप्ति सिद्ध हो।" वाद-विवाद में तीन सावधानियां अवश्य बर्तनी चाहिएं। प्रथम-पक्षपात रहित होना। द्वितीय-निर्भीकता के साथ दूसरों के दोषों का प्रकाशन। तृतीय वाद-विवाद का उद्देश्य दूसरे को मानसिक पीड़ा देकर उसे हानि पहुंचाना न हो। दूसरों के दोषों के प्रकाशन के सम्बन्ध में कुछ व्यक्तियों को आपत्ति हो सकती है कि दूसरों के दोष बखान करने से वे लोग अप्रसन्न होंगे और पारस्परिक कलह बढ़ेगा। इसके उत्तर में हमारा कथन है कि मनुष्य को जब तक अपने दोष का ज्ञान न होगा वह उसे दूर कैसे कर सकेगा? दूसरे के चेहरे पर लगी कालिमा को दूर करने के लिए उसकी ओर संकेत करने का साहस तो बटोरना ही पड़ेगा। हां! ऐसा करने से पूर्व अपना दोष निवारण करना आवश्यक है। मद्य द्वारा मद्यपान की बुरी लत को त्यागने के उपदेश का कहीं प्रभाव पड़ता है? इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द का यह कथन बड़ा ही उपयुक्त है, "अस्तु जो हो परन्तु बहुत मनुष्य ऐसे हैं जिनको अपने दोष तो नहीं दीखते किन्तु दूसरों के दोष देखने में अत्युद्यत रहते हैं। यह न्याय की बात नहीं क्योंकि प्रथम अपने दोष देख निकालने के पश्चात् दूसरे के दोषों में दृष्टि देके निकालें।" इसमें तो दो मत नहीं हो सकते कि सदा प्रिय और हितकारक बोलना चाहिए। परन्तु यह भी ध्यान रहे, "जो-जो दूसरे का हितकारक हो और बुरा भी माने तथापि कहे बिना न रहे।" दुखती आंखों में मैल को घुलवाना बच्चे को प्रिय भले ही न हो दयालु मां तो अपने पुत्र के मुख को स्वच्छ करने के इस अप्रिय काम को करती ही है। दूसरों के दोष प्रकाश करने से कतराने वाले या तो कायर होते हैं चापलूस।

सत्यासत्य के अन्वेषक को दूसरों के हित के लिए की अप्रसन्नता का खतरा मोल लेना ही पड़ता है। म दयानन्द जी का जीवन इस बात का साक्षी है। वे लि हैं, "क्योंकि सत्पुरुषों को योग्य है कि मुख के सामने दू का दोष कहना और अपना दोष सुनना, परोक्ष में दू के गुण सदा कहना। और दुष्टों की यही रीति है सम्मुख में गुण कहना और परोक्ष में दोषों का प्र करना। जब तक मनुष्य दूसरे से अपने दोष नहीं क तब तक मनुष्य दोषों से छूटकर गुणी नहीं हो सकता

वाद-विवाद में तीसरी सावधानी, जिसका पू उल्लेख हो चुका है, यह है कि एक दूसरे को हानि पहुंचाई जाये। दूसरों की आलोचना करते समय म दयानन्द इस ओर सदैव जागरूक रहे हैं। उनका क है "क्योंकि मेरा तात्पर्य्य किसी की हानि वा वि करने में नहीं किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने कराने है" महर्षि की अभिलाषा थी कि सभी व्यक्ति नियम का पालन करें। "इसी प्रकार सब मनुष्यों न्याय दृष्टि से वर्त्तना अति उचित है।...यदि हम मनुष्य और विशेष विद्वज्जन ईर्ष्या द्वेष छोड़ सत्यासत्य निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग क करना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है

सत्यासत्य का निर्णय करने के जिस व्यावहा उपाय का हमने विवेचन किया है, उससे कई अवस्था में सफलता प्राप्त नहीं हो पाती। वाद-विवाद में प्र यह देखा जाता है कि जिसको एक सत्य कहता है, दू उसी को मिथ्या बतलाता है। इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रकार के वाद-विवाद में उक्त सावधानियों का पालन नहीं किया जाता। महर्षि दयानन्द ने सत्यासत्य निर्णय करने के पांच महत्वपूर्ण साधन और बतलाये जो इस प्रकार हैं :—

"पहला—ईश्वर, उसके गुण कर्म स्वभाव और विद्या। दूसरा—सृष्टिक्रम। तीसरा—प्रत्यक्षादि प्रमाण। चौथा—आप्तों का आचार, उपदेश, ग्रन्थ सिद्धान्त। और पांचवां—अपने आत्मा की साक्षी, कूलता, जिज्ञासुता, पवित्रता और विज्ञान"। इन्हीं साधनों को कुछ विस्तार से सत्यार्थप्रकाश के तृतीय ल्लास में कुछ क्रम भेद से प्रस्तुत किया है—"परीक्षा प्रकार से होती है।

एक—जो जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभावऔर



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से अनुकूल हो वह वह सत्य और उससे विपरीत असत्य है। दूसरा---जो जो सृष्टिक्रम से अनुकूल वह वह सत्य और जो जो सृष्टिक्रम से विरुद्ध है वह सब असत्य है जैसे कोई कहे कि बिना माता-पिता के योग से लड़का उत्पन्न हुआ, ऐसा ऐसा कथन सृष्टिक्रम से विरुद्ध होने से सर्वथा असत्य है) तीसरी—'आप्त' अर्थात जो धार्मिक विद्वान, सत्यवादी निष्कपटियों का संग उपदेश के अनुकूल है, वह वह ग्राह्य और जो जो विरुद्ध वह अग्राह्य है। चौथी—अपने आत्मा की पवित्रता विद्या के अनुकूल अर्थात जैसा अपने को सुख प्रिय और दुःख अप्रिय है वैसे ही सर्वत्र समझ लेना कि मैं भी किसी को दुःख वा सुख दूँगा तो वह भी अप्रसन्न और प्रसन्न होगा। और पाँचवीं—आठों प्रमाण अर्थात् प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, ऐतिह्य, अर्थापत्ति, सम्भव और प्रभाव।"

सत्यासत्य का निर्णय करने के लिए वाद-विवाद करते समय इन पांचों परीक्षाओं में से किस-किसका किस क्रम से उपयोग किया जाये, यह वादी की योग्यता तथा उसकी विचारधारा पर निर्भर करता है। यदि वह अस्तिक है और वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानता है तो प्रथम परीक्षा का उपयोग लाभकारी रहेगा। यदि वह नास्तिक है तो सर्व प्रथम पांचवीं परीक्षा का उपयोग करना चाहिए और उसके बाद दूसरी। चौथी परीक्षा सबके लिए समान रूप से उपयोगी रहेगी।

सत्यासत्य का निर्णय हो जाने पर भी प्रत्येक व्यक्ति उनका ग्रहण और त्याग कर सके, यह आवश्यक नहीं है। सत्य को जानते हुए उसमें प्रवृत्ति नहीं होती और असत्य को जानते हुए उससे निवृत्ति नहीं हो पाती। ऐसा करने के लिए दृढ़ संकल्प, स्वाध्याय और सत्संग आवश्यक हैं। इस नियम में 'सर्वदा' पद महत्वपूर्ण है। सत्य के ग्रहण और असत्य को छोड़ने पर बल देने के लिए यह पद नियम में रखा गया है। इसका आशय यह है कि आर्यसमाज के प्रत्येक सदस्य को प्रत्येक स्थिति में सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में उद्यत रहना चाहिए।

## इस नियम के आधार वेद मन्त्र

१. अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि॥

अर्थ—हे सत्य भाषण आदि धर्मों के पालन करने और सत्योपदेश करने वाले परमेश्वर में जो झूंठ से अलग सत्य व्रत अर्थात् सत्य बोलना, सत्य मानना और सत्य करना है, उसका अनुष्ठान अर्थात् नियम से ग्रहण करने वा जानने और उसकी प्राप्ति की इच्छा करता हूं। मेरे उस सत्य व्रत को आप अच्छी प्रकार सिद्ध कीजिये जिससे कि मैं उक्त सत्यव्रत के नियम पालन करने में समर्थ होऊं और मैं इसी प्रत्यक्ष सत्य व्रत के आचरण का नियम करूंगा।

२—सत्येनावृताश्रिया प्रावृता यशसा परीवृताः॥
अथर्व० कां० १२।अनु० २। मं० ५॥

अर्थ—(सत्येनावृता) सब मनुष्य प्रत्यक्षादि प्रमाणों से सत्य की परीक्षा करके सत्य के आचरण से युक्त हों। (श्रिया प्रावृता) हे मनुष्य लोगो! तुम शुभ गुणों से प्रकाशित होके, चक्रवर्त्तिराज्य आदि ऐश्वर्य को सिद्ध करके, अति श्रेष्ठ लक्ष्मी से युक्त हो के, शोभारूप श्री को सिद्ध करके, उसको चारों ओर पहिन के शोभित हो (यशसा परीवृताः) सब मनुष्यों को उत्तम गुणों का ग्रहण करके सत्य के आचरण और यश अर्थात् उत्तम कीर्त्ति से युक्त होना चाहिये।

## देव दयानन्द !

अंधकार की गहन छाया से ढंका था देश,
नाना पंथ मत-वाद सभी को भुलाते थे।
पाखण्ड और अविद्या से त्रस्त ग्रस्त सारे जन,
रोते थे न किन्तु सत्य मार्ग जान पाते थे।
पीड़ा थी न पता उपचार का था किसी को भी,
सर्वनाश राह पर दौड़े चले जाते थे।
ऐसे में था आया दिव्य प्राण देव दयानन्द,
ज्ञान ज्योति दान दे के जोड़े टूटे नाते थे।

—भारतेन्द्र

अम्बाला छावनी के सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री डा० राजारामसिंह जी का २०-३-७६ को अचानक देहावसान हो गया।

सत्यार्थ प्रकाशः २००) सैकड़ा
ऋषि जीवन : १००) सैकड़ा
मंगाएं बांटें।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

# मेरी विदेश यात्रा

* * *

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती एक वर्ष के लगभग विदेशों में वैदिक धर्म प्रचार कर भारत लौट आए हैं। प्रस्तुत है उनकी विदेश यात्रा की कहानी। —संपादक

जीवन में कई बार ऐसे प्रसंग आये कि मैं भी विदेश यात्रा के लिए जाऊं परन्तु मैं उन प्रसंगों को टालता रहा यह कहकर कि मैं संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् ही विदेश भ्रमण के लिए निकलूंगा वैदिकधर्म का प्रचार और प्रसार करने के लिए १६ फरवरी १९७५ को मैंने संन्यासाश्रम में प्रवेश किया और अप्रत्याशित रूप से ५ अप्रैल १९७५ को मेरा विदेश यात्रा का कार्यक्रम निर्धारित हो गया।

५ अप्रैल को 'दयानन्द-संस्थान' में एक भव्य समारोह में मुझे विदाई दी गई। रात्रि में ११ बजे के० एल० एम० द्वारा हालैण्ड और वहां से सूरिनाम पहुंचना था। वायुयान लगभग एक घण्टा देरी से उड़ा और परिणामस्वरूप एमस्टर्डम भी एक घण्टे लेट ही पहुंचा। जब मैं अपनी टिकट और स्वास्थ्य पत्र दिखाकर K.L.M. के काउण्टर पर पहुंचा तो सूरिनाम वाला यान जा चुका था। वायुयान छूटने की बात सुनकर एक क्षण के लिए तो मैं स्तब्ध रह गया। विदेश का मामला, न कोई जान पहचान, न पास में रुपया पैसा। भारत से चलते समय भारतीय सरकार द्वारा तीन पौंड दिये गए थे। विदेश में तीन पौंड से क्या होता है? यह तो टैक्सी के किराये के लिये भी पर्याप्त नहीं था। अस्तु।

मैंने अपने जीवन को परमात्मा के आश्रित छोड़ा हुआ है। विचार आया कुछ-न-कुछ हो ही जाएगा। K.L.M. वालों को सारी स्थिति समझाई। उन्होंने एक दिन के लिए एक होटल में रहने और खाने का प्रबन्ध कर दिया। मैं होटल में रहा, वहां का भोजन नहीं किया।

दूसरे दिन जब मैं K.L.M. की मिनी बस में ऐयरपोर्ट के लिए आकर बैठा तभी एक अंग्रेज भी आगया। उसने ऊपर से नीचे तक गर्म कपड़े लादे हुए थे कारण वहां सर्दी खूब थी। सांय-सांय करती हुई ठण्डी हवा से शरीर सीहर उठता था और मैं था एक साधारण सूती कुर्ते और कटि वस्त्र में। मुझे उस दशा में देख उस अंग्रेज को आश्चर्य हो रहा था। अन्ततः उसने कहा—It is very cold to day. मैंने उत्तर में कहा—yes, it is very cold. उन्होंने फिर कहा—Then, why you have not put on your coat? मैंने उत्तर दिया—I have no coat. I have missed my plane and my lugagge has reached the destination. बात समाप्त हुई। थोड़ी देर में हम ऐयरपोर्ट पर पहुंचे वहां १२-२५ का वायुयान पकड़ नौ घण्टे की लम्बी यात्रा के पश्चात् लगभग ५-३० पर मैं सूरिनाम (साण्ड्रे एयर पोर्ट पर) पहुंचा।

आर्यसमाज के अधिक, पण्डितगण, स्त्री आर्यसमाज की महिलाएं—आबाल वृद्ध काफी संख्या में वहां स्वागत के लिए उपस्थित थे। मुझे सूरिनाम के धन कुबेर और उदार हृदय श्री शाऊ जी की कार में बैठाकर सभी जन पैरामारीबो की ओर चले। वहां आर्य दिवाकर के भव्य-भवन में मुझे ठहरा दिया गया। ५ अप्रैल को प्रस्थान कर मैं ७ अप्रैल को सूरिनाम पहुंचा।

मार्ग में 'राधिका रेडियो-स्टेशन' से १० मिनट का मेरा एक छोटा-सा भाषण हुआ जिसमें मैंने सूरिनाम निवासियों के लिए वेद का सन्देश दिया।

सूरिनाम एक सुन्दर टापू है। चारों ओर हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है। मकान अधिकांश लकड़ी के बने होते हैं। आगे फुलवारी होती है और पीछे पर्याप्त भूमि होती है जिसमें अनेक प्रकार के फलदार वृक्ष लगे होते हैं। ग्रामों में खेतों में ही घर बने हुए हैं। वहीं रहते हैं वहीं खेती का कार्य करते हैं।

यहां की प्रमुख फसल चावल है। एक वर्ष में दो फसलें काट ली जाती हैं। सभी कार्य मशीनों द्वारा होता है। ट्रैक्टर द्वारा भूमि तैयार कर ली जाती है फिर वायुयान द्वारा बीज छींट दिया जाता है। मशीनों के द्वारा ही कटाई आदि कार्य भी होते हैं।

फलों में आम यहां खूब होता है प्रायः सारे साल रहता है। पेड़ एक वर्ष में दो फसलें प्रदान करते हैं। कुछ वृक्षों में हर समय ही फल लगते रहते हैं। परन्तु भारतीय दशहरी और चौंसा का मजा उन में नहीं है। रेशे बहुत होते हैं।

केला, जिसे यहां बाना अथवा बकवा कहते हैं, भी खूब पैदा होता है। यहां से केले का निर्यात भी किया जाता है। केले के प्रकार भी यहां बहुत हैं।

अमरूद यहां के बाजारों में मेरी दृष्टि में नहीं आया। हो सकता है थोड़ी बहुत मात्रा में आता है, वहां यह जंगली फल के रूप में बहुत होता है।

समुद्र के मध्य में स्थित होने के कारण यहां नारियल



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बहुत होता है। इस का तैल भी प्रयुक्त होता है और कच्चे नारियल का पानी खूब पिया जाता है।

तरबूज यहां भारी मात्रा में देखा। दो-तीन रुपये से लेकर अट्ठारह बीस रुपये तक का बिक जाता है। स्मरण रहे सूरिनाम का एक गिल्डन भारत के चार रुपये के बराबर होता है।

सब्जियों में यहां टमाटर, खीरा, तोरई, घिया, सीताफल, करेला आदि होती हैं इसके अतिरिक्त बोरा, कुसलान्ती, तपावीरी, मकोय आदि भी पर्याप्त मात्रा में होती हैं। मूली, अदरक, प्याज आदि भी दिखाई दिये परन्तु गाजर यहां नहीं होती है, फूल गोभी भी पैदा नहीं होती हां पत्ता गोभी होती है। आलू का आयात किया जाता है। अरबी और कचालू यहां काफी पैदा होता है।

जो, गेंहूं, चना, बाजरा, ज्वार यहां पैदा नहीं होते। मसूर मटर भी नहीं बोया जाता। बाजार में काबुली चना, मटर और मसूर उपलब्ध हो जाते हैं जो दूसरे देशों में आयात किये जाते हैं।

यहां का जलवायु समशीतोष्ण है। साल भर टैम्परेचर २० से ३० सैं० ग्रेड रहता है। वर्षा एक बार मई, जून में होती है इसे बड़ी वर्षा कहते हैं दूसरी बार जनवरी-फरवरी में इसे छोटी वर्षा कहते हैं।

शहर में सड़कें पक्की हैं और गांवों में प्रायः कच्ची बारिश में कच्ची सड़कों की दुर्दशा हो जाती है।

प्रमुख व्यवसाय खेती है। इसमें भी चावल और गन्ना प्रमुख हैं। पशु पालन भी होता है। यहां मैंने सर्वत्र गौएं ही देखीं, भैंसें मुझे इस मास के प्रवास में कहीं दिखाई नहीं दीं। मुंगों में एक गोशाला भी देखी। बहुत बढ़िया नस्ल की गौएं और सांड वहां दिखाई दिए। कहते हैं इस गोशाला का दूध सारे सूरिनाम में सब से श्रेष्ठ है। परन्तु यह दूध केवल बौक्सिट कम्पनी के कर्मचारियों को ही दिया जाता है।

भारत की मौसमी की भांति 'परसीना' नामक का फल यहां बहुत भारी मात्रा में पैदा होता है। इसे काट कर भी खाते हैं और रस का भी प्रयोग होता है। संतरा भी खूब पैदा होता है। एक-एक सन्तरा ७००-८०० ग्राम तक का हो जाता है। छिलका बहुत मोटा होता है।

यहां बौक्सिट की खानें हैं और इसी कारण बौक्सिट के कारखाने भी। इस धातु से एलमूनियम तैयार करके विदेशों में भेजा जाता है। ९० प्रतिशत आमदनी इसी से होती है।

यहां की जनसंख्या लगभग २-१/२ लाख है। भारतीयों की संख्या लगभग ५०% है। नीगरो ३५% है। शेष १५% में चीनी, मलाई और रेड इण्डियन आदि हैं। सभी में आपस में प्रेम एवं सौहार्द है।

सूरिनाम हालैण्ड के अधीन था परन्तु २५ नवम्बर १९७५ को यह देश स्वतन्त्र हो गया है इस समय वहां मिली-जुली सरकार है। शीघ्र ही चुनाव होने वाले हैं।

यहां के बाजारों में घरेलू सभी वस्तुएं सरलता से उपलब्ध हो जाती हैं। वहां की दृष्टि से देखें तो भाव भी बहुत सस्ते हैं। दूध ३५ पैसे लीटर, पैट्रोल ५२ पैसे प्रति लीटर, चावल ३० पैसे से लेकर ७५ पैसे किलो, चीनी ९५ पैसे किलो। आटा पिछत्तर पैसे १ रुपये किलो, दालें प्रायः १-१/२ रुपये किलो। इसी प्रकार साग-सब्जी सभी सस्ती हैं। केला बहुत मोटा और बढ़िया एक रुपया दर्जन आम सीजन में प्रायः एक रुपया किलो। सेव आयातित है अतः महंगा है ७५ पैसे का एक। कटहल प्रायः ढाई-तीन रुपये का एक। नारियल २५ पैसे से लेकर ४० पैसे तक। परसीना एक रुपये के १६ से २५ तक। कपड़ा अच्छी क्वालिटी का प्रायः १-१/२ रुपये मीटर।

यहां प्रायः दो सौ-ढाई सौ रुपये कमाने वाला व्यक्ति १० बच्चों का पालन पोषण आराम से कर लेता है। गरीबी यहां दिखाई नहीं देती। भिखमंगे कहीं-कहीं अवश्य दिखाई दिये।

यहां कार्यालयों का समय ७ से २ बजे तक है। शनिवार को ११-१/२ बजे बन्द हो जाते हैं। स्कूल ८ से १२ और १ बजे तक लगते हैं। शनिवार को छुट्टी रहती है। जो स्कूल आर्यसमाज और सनातन धर्म आदि संस्थाओं द्वारा चलाए जाते हैं—उन सबका पूरा खर्च भी राज्य ही वहन करता है। अनाथालयों के लिए भी प्रति बालक कुछ अनुदान दिया जाता है।

खान-पान भारत जैसा ही है। परन्तु मांसाहार यहां बहुत है ९९% लोग मांस खाते हैं। मछली, केकड़ा, बकरा, सूअर सभी का सफाया कर दिया जाता है। यहां के खान-पान में दो विशेषताएं मैंने देखीं—एक थी यहां पशुओं की भांति खड़े होकर नहीं खाते। प्राचीन भारतीय पद्धति के अनुसार बैठकर खाते हैं। हां इतना अन्तर अवश्य आ गया है कि जमीन की बजाए ऊपर बैठते हैं। पत्तलों पर खाना परोसा जाता है। दूसरी बात है खाने की सादगी। हमने दावतें शीराज की गत सुनी थी वह सूरिनाम में देखी।

कदाचित् बहुत से पाठकों को दावते शीराज का पता न हो अतः हम उसका वर्णन करना आवश्यक समझते हैं। एक बार शेखसादी अपने किसी मित्र के यहां मिलने गये। मित्र ने इनका बड़ा स्वागत सत्कार किया। नाना प्रकार के पकवान तैयार कराये गये। जिस समय भोजन शेखसादी के सामने आया तो उसे देखकर शेख ने कहा हाय दावते शीराज। दोस्त ने सोचा शीराज में इससे भी

(शेष पृष्ठ १९ पर)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## साप्ताहिक घटना चक्र

दिनांक १४ मार्च:—आक्रमण या दबाव से बचने के लिए अनुशासन, साहस व एकता जरूरी—प्रधान मंत्री इन्दिरा गाँधी का आह्वान—राज्य सभा के २८ प्रत्याशी निर्विरोध निर्वाचित—६० लाख परिवारों को आवासीय भूमि—सीमा पार व्यापक सैनिक तैयारियां-रक्षा मन्त्री का सर्तकत्ता पर बल—उच्च शिक्षा राष्ट्रीय विकास का साधन बने—राष्ट्रपति ।—दिल्ली में वर्षा व ओले—संस्कृत साहित्य में वर्णित समाजवादी परम्परा का प्रसार आवश्यक—राष्ट्रपति । आर्थिक स्वतन्त्रता सर्वप्रथम लक्ष्य।

१५ मार्च—देश के हर भाग में एक ही भाव पर सस्ता कपड़ा—इस वर्ष १५ लाख हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि की सिंचाई—अमेरिका का भूमिगत बम विस्फोट—बोकारो की तीसरी भट्टी चालू—बांकुड़ा में १८ करोड़ टन कोयले का भण्डार—पिछड़े क्षेत्रों के त्वरित विकास के लिए काम शुरू—भारत के तेल और खनिज में शीघ्र आत्मनिर्भर होने की आशा—चन्द्रजीत यादव—भोपाल बम्बई के बीच सीधी फोन सेवा चालू—उप-राष्ट्रपति द्वारा संस्कृत के प्रचार पर बल—निर्धनों के लिए सस्ते मकान।

१६ मार्च :—नये केन्द्रीय बजट में जनता को व्यापक स्तर पर राहत—आय कर में छूट—साबुन, ब्लेड, पंखे, फ्रिज, टैलीविजन की कीमत घटेगी। अगले वर्ष रक्षा पर १, ३४ अरब रुपये का अधिक व्यय—रूस मैत्री समझौता समाप्त—रूस व चीन की सेनाओं में जोरदार संघर्ष—होली पर्व सानन्द सम्पन्न।

१७ मार्च :—इजराईल के पास २० अणुबम—लेबनान के राष्ट्रपति के महल पर गोलाबारी—नेपाल के राजदूत श्री बाम मल्ल द्वारा होली पर्व पर दयानन्द संस्थान द्वारा प्रकाशित वेद भाष्य के अन्तिम खण्ड का विमोचन।

१८ मार्च :—उत्तरदायित्व पूर्ण किए बिना पद-त्याग नहीं—प्रधान मन्त्री की घोषणा।—दलीय निर्वाचन में अमरीकी राष्ट्रपति फोर्ड को बहुमत—मिस्र को मिग के पुर्जे देने में भारत असमर्थ।

१९ मार्च :—राजधानी (दिल्ली) में साईकल कर समाप्त—उर्वरकों की कीमतों में भारी कमी—आर्यभट्ट की १५०० वीं जयन्ती मनाई जाएगी—लोकसभा में बजट की सराहना—अमेरिका मिस्र को हथियार बेचेगा—गेहूं वसूली कीमत में वृद्धि नहीं—पानी के बटवारे पर बंगला देश की नई शर्त।

२० मार्च :—राज्यपाल सम्मेलन में राष्ट्रपति द्वारा देश के बदलते वातावरण में राज्यपालों के दायित्व पर प्रकाश—लेबनान के प्रधान मन्त्री के विमान पर राकेटों से हमला—राज्यपाल सम्मेलन में अदालतों के रिट सम्बन्धी अधिकारों में समुचित संशोधनों पर जोर—राजकोट में अवैध शराब पीने से ७ मरे—तमिलनाडु के बजट में ६ करोड़ के नए कर—नेपाल के लिए ६ सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल का प्रस्थान—भारत के शान्ति प्रयासों की मलयेशिया द्वारा सराहना-अध्यक्षीय प्रणाली की अफवाह निराधार—अहमदाबाद नगर निगम में जनता मोर्चा अल्पमत में—लोकसभा का सत्र २२ मई तक—४२ फरार व तस्करों पर इनाम घोषित—अमेरिका में भव्य हिन्दू मन्दिर बनेगा—राजकुमारी मार्गरेट व अल कानूनी तौर पर पृथक होंगे—नेपाल में भ्रष्टाचार के आरोप में अतिरिक्त न्यायाधीश बन्दी।

---

(पृष्ठ १८ का शेष)

बढ़िया दावत दी जाती होगी। दूसरे दिन और कई नई चीजें बनाई गईं परन्तु शेखसादी ने वही देखकर शीराज की बात कही। तीसरे दिन भी यही हुआ। कुछ दिन के पश्चात् यह मित्र शीराज में शेखसादी के यहां पहुंचा। शेखसादी ने मित्र का भव्य स्वागत किया। भोजन के समय साधारण खाना उनके सामने प्रस्तुत कर दिया। मित्र ने सोचा दावते शीराज में बहुत तैयारी करनी पड़ती होगी अतः असली दावत कल होगी परन्तु दूसरे दिन भी वैसा ही खाना। तीसरे दिन भी वैसा ही खाना। आखिर मित्र ने पूछा—'शेखजी! वह शीराज की दावत कौनसी है?' शेखसादी ने कहा—यही तो दावते शीराज है, आप कितने ही दिन मेरे यहां रहें मुझे आपका कोई भार अनुभव नहीं होगा।"

सूरिनाम में भारत की भांति विविध मिठाइयां और पकवान नहीं बनते। वस्तुतः चाट-पकौड़ी और मिठाइयां वहां नहीं हैं। अब एक दुकान अवश्य खुली है। सूरिनाम की दावत की यह विशेषता है कि जैसा घर में भात आदि खाते हैं वही प्रस्तुत कर देते हैं। अमीर-गरीब सब एक ही साथ बैठ कर भोजन कर लेते हैं।

नौकर वहां हजार घरों में एक घर में मिलेगा। झड़ू लगाने से लेकर कपड़ा धोना, भोजन बनाना सब कार्य देवियां करती हैं। लाण्ड्री वहां मुझे कहीं दिखाई नहीं दी। महतर मैंने वहां घरों में घुसते नहीं देखा। घर का कूड़ा आदि इकट्ठा करके सड़क पर रख देते हैं वहां से नगरपालिका के ट्रक उठाकर ले जाते हैं। (क्रमशः)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—कविराज धर्मदत्त वैद्य

# स्वामी धर्मानन्द जी का संन्यास प्रवेश

पण्डित धर्मदेव जी के साथ मेरा परिचय ६० वर्ष पुराना है। १९१७ में जब मैं गुरुकुल कांगडी से स्नातक बनकर निकला और जब मेरी आयु २० वर्ष की थी पंडित धर्मदेव जी कालेज में प्रविष्ट हुए थे। उस समय इनकी आयु १५-१६ वर्ष की ही थी। उन दिनों मैं एक ग्रन्थ 'प्राचीन भारत में प्रजातन्त्र राज्य' नामक लिख रहा था। उस प्रसंग से मुझे स्नातक बन जाने के बाद गुरुकुल में रहना पड़ा। तब मैं इनके संपर्क में आया। यह सम्पर्क बाद में मैत्री में बदल गया। यह मित्रता उत्तरोत्तर बढ़ती गई। आज १९७६ में यह मित्रता ६० वर्ष पुरानी हो गई है: आज जब एक मित्र अपने सर्व सांसारिक सम्बन्ध तोड़ रहा हो तो मित्रों को दुःख का होना स्वाभाविक ही है।

### आर्यसमाज की सेवा

पंडित जी १९२० में स्नातक हो गये थे और आर्य-समाज के प्रचार के लिये आपको दक्षिण भारत में भेजा गया। इस समय से आज १९७६ तक ५६ साल हो गये हैं ये आर्यसमाज के प्रचार में लगे हैं। आर्यसमाज में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हुआ है, या है, जिसने इस दीर्घ काल में समाज सेवा के अतिरिक्त दूसरे किसी अवान्तर कार्य में अपना समय नहीं दिया। आपने इस काल में दर्जनों से अधिक ग्रन्थ लिखे हैं और सैंकड़ों भाषण दिये होंगे। आपने अपना सारा समय आर्यसमाज की सेवा में लगाया है। आपका लिखा सामवेद का इंग्लिश भाष्य यूरोप में सर्वप्रिय हुआ है। आपने ७ वर्ष निरन्तर परिश्रम करके सम्पूर्ण ऋग्वेद का इंग्लिश भाष्य लिखा है मुझे पूर्ण आशा है उसके लिए शीघ्र ही कोई प्रकाशक मिल जायेगा।

### योग्यता

वेदों के विषय में भी आप एक प्रामाणिक व्यक्ति माने जाते हैं। वेद का जितना अध्ययन आपने किया है उतना कम लोगों ने ही किया है। आर्यसमाज के जगत् में सब मिलाकर दो दर्जन से अधिक वेदों के विद्वान् नहीं होंगे उनमें प्रायः आपका नाम आगे लिया जाता है। गुरुकुल के स्नातकों में से जो वेद के विद्वान् हैं या हुए हैं जैसे कि चतुर्वेद भाष्यकार पं० जयदेवजी, आचार्य अभय देव जी, पं० बुद्धदेव जी हुए हैं तथा पं० विश्वनाथ जी, आचार्य प्रियव्रत जी, श्री हरिशरण जी, पं० सत्यव्रतजी वर्तमान काल में हैं उन सबमें भी आपका नाम आगे लिया जाता है। वेदों के विषय में अपनी जिज्ञासा मिटाने के लिए बहुत अधिक लोग आपके पास आते हैं और ये सबका समाधान करते हैं। हम लोगों की इच्छा है कि जैसे इन्होंने सामवेद और ऋग्वेद का इंग्लिश भाष्य लिखा है वैसे ही ये यजुर्वेद का इंग्लिश भाष्य लिखें तथा वेद मंत्रों का एक ऐसा संग्रह ग्रन्थ इंग्लिश में लिखें जिसे युरोपियन लोग पढ़ सकें और वेदोपदेशों की उच्चता को अनुभव करें। आपकी एक और विशेषता है कि आप अनेक भाषाओं के वक्ता हैं। हिन्दी, संस्कृत, इंग्लिश के तो आप अच्छे ज्ञाता हैं ही। आप फ्रान्सीसी तथा जर्मन भाषा का भी साधारण ज्ञान रखते हैं तथा दक्षिण भारत की दो तीन भाषाओं के भी ज्ञाता हैं। आपने एक ग्रन्थ अभी लिखा है जिसमें आपने सिद्ध किया है कि सर्व भाषाओं का आदि स्रोत वैदिक भाषा है।

हमें पूर्ण आशा है कि ऐसे विद्वान् व्यक्ति द्वारा आर्य-समाज की अभी बहुत सेवा होनी है। मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि ईश्वर इनको चिरायु करे और इन्हें स्वस्थ प्रसन्न रखें।

## आर्य बालकों की पहचान

आर्य बालकों की पहचान
सच्चे सादे और मतिमान
पर—सेवा को रहते तत्पर
सदा बड़ों का करते आदर
प्रातः उठ ले प्रभु का नाम
मात पिता को करें प्रणाम ।। आर्य०

गुरुजन का लेकर आशीष
बनते हैं विद्या वागीश
सदाचार का पालन करते
वे बाधा से कभी न डरते
करते सदा बड़ों का मान ।।आर्य०

सदा साहसी सत्य पुजारी
जिन्हें मानती दुनिया सारी
आपस में मिल मोद मनाते
मात पिता को सदा रिझाते
पढ़ते सदा लगाकर ध्यान ।। आर्य०

सत्येन्द्र



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पौराणिक पंडितों की दृष्टि में—

—आनन्द कश्यप

# क्या विवाह का मुहूर्त नहीं रहा ?

●●●●

कुछ पण्डितों ने शास्त्रीय प्रमाण देकर यह प्रचारित कर दिया कि अब नवम्बर तक विवाह पर पाबन्दी है। यह क्या तमाशा ! जिसकी लड़की ब्याहने योग्य है और बात पक्की हो चली है वह अब घर बैठी रहे।

पण्डितों के शास्त्र कहते हैं कि १३ मार्च से सूर्य मीन राशि में जाएंगे। खरमास लग जाएगा। १४ अप्रैल से सूर्य आगे मेष में चलेंगे तो गुरु अस्त, करीब एक महीने के लिए। गुरु उदय हुए तो फिर शुक्र १६ मई से अस्त और मध्य जुलाई तक डूबे रहेंगे।

अस्त-उदय का चक्कर खत्म तो चौमासा (चातुर्मास)। बरसात में देवता सोए रहेंगे। विवाह देवोत्थानी एकादशी तक बन्द।

लेकिन शादी पर पाबन्दी का यह शास्त्रीय हुकुम उन लोगों के लिए है जो अपने कुलपुरोहित से बिना मुहूर्त पूछे जिन्दगी में चार कदम नहीं बढ़ सके। दिमाग के दरवाजे बन्द हों तो अलग बात है नहीं तो हमारे प्राचीन शास्त्रों में हर सही बात की व्यवस्था है। सब नियमों के शास्त्रीय अपवाद मिलेंगे। आपद्धर्म तो अलग चीज है। शास्त्र कुण्ठित नहीं हैं, कुण्ठित बुद्धि के लोग कुछ टुकड़े पकड़ कर जमे रह जाएं और देशकाल के अनुसार विचार-धारा की प्रगति को नजरअन्दाज करते रहें तो क्या किया जाय।

जहां 'निर्णयसिन्धु' आदि प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर आप कह सकते हैं कि गुरू और शुक्र अस्त में विवाह का एकदम निषेध है वहाँ ऐसे शास्त्र-सम्मत प्रमाण भी बिखरे पड़े हैं कि विवाह जैसे सामाजिक और वैयक्तिक जीवन के अनिवार्य संस्कार के लिए कोई मुहूर्त जरूरी नहीं है।

वास्तव में सदियों तक गुलामी के युग में अपने धर्म और संस्कृति के विशेष तत्वों को सुरक्षित रखने के मोह में ही विद्वान पण्डितों ने छोटी-छोटी रस्मों को विस्तार और प्रतिबन्धों के आडम्बर में बांध कर उनका स्वरूप बनाए रखने का उपक्रम किया था। उसमें सफलता भी मिली। लेकिन क्या आदमी अपने समय के परिवर्तन और आवश्यकताओं से मुंह मोड़ सकता है ? प्राचीन शास्त्रों ने इस बात पर पूरा ध्यान दिया था और धार्मिक कृत्य में देश-काल तत्त्व को स्वीकारा था।

पुरातनवादी पंचागों में नवम्बर तक विवाह के मुहूर्त नहीं दिए गए हैं। लेकिन आप प्रबुद्ध पण्डितों और ज्योतिष के अध्येताओं से मिलिए तो पता चलेगा कि लकीर के फकीर वाली बात नहीं है। प्रतिष्ठित विद्वान डा० गिरधारीलाल गोस्वामी जी कहते हैं कि शास्त्रों में पुराणों में यह भी लिखा है कि :—

रवीज्य चन्द्रशुद्धिश्च दश वर्षाणि कारयेत्।
अतऊर्ध्वं रजस्कन्या तस्माद् दोषो न विद्यते ॥

अर्थात् जब तक कन्या दस वर्ष की हो तभी तक रवि और इज्य (बृहस्पति) और चन्द्र की शुद्धि का विचार करना। उसके बाद जब कन्या बड़ी हो जाय, रजस्वला हो जाय तब ये दोष नहीं माने जाते।

लिखा है कि जब 'कन्या यौवन-शालिनी' हो जाय तब लग्न शुद्धि आदि मुहूर्त नहीं देखना है। डा० गोस्वामी कहते हैं कि नारद पुराण में लिखा है कि गोधूलि वेला अर्थात् सन्ध्या-समय का गठबन्धन पुत्र-पौत्र की वृद्धि कराता है। यही नहीं कट्टर-पन्थियों के सन्दर्भ ग्रन्थ 'मुहूर्त चिन्तामणि' का प्रमाण गोधूलि वेला के सम्बन्ध में इस प्रकार है :

नास्यामृक्षं नतिथिकरणं नैव लग्नस्य चिन्ता,
नो वा वारो न च लवविधिः नो मुहूर्त्तस्य चर्चा।
नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्र दोषो,
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता ॥

कहने का तात्पर्य यही है कि जब लड़की बड़ी हो जाए तो मुहूर्त के नाम पर विवाह नहीं रोका जाना चाहिए। रोज शाम सूरज डूबने का समय विवाह का शुभ समय होता है।

मुहूर्त के अवसर काम-काज करना परम्परागत आस्था की बात है। काल-विशेष में ग्रहों के शुभ विकिरण के विज्ञान की बात बहुत दूर की है। पोथी-पत्रा वाले मुहूर्त पर निर्भरता आस्था-भंग-जनित एक प्रकार का भय है। मन चंगा है तो फिर क्या भय। अंगिरा ऋषि तो कहते हैं कि पूछ-ताछ और मीन-मेख की क्या जरूरत। जब भी शुभ कार्य के लिए उत्साह हो वही उसका मुहूर्त समझना चाहिए। ●



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि दयानन्द धर्मार्थ औषधालय राणा प्रताप बाग दिल्ली के तत्वावधान में भारत विख्यात डाक्टर शराफ ३ अप्रैल से १० अप्रैल तक आंखों का निरीक्षण करेंगे। भोजन, आवास और ओषधि की व्यवस्था समाज की ओर से निःशुल्क होगी।

—श्री आर्यभिक्षु जी व्याख्यान वागीश का ५४वां जन्म दिवस ३१-१-७६ को आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में बड़े समारोह के साथ मनाया गया।

श्री पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड ने चारों वेदों के शतकों से ४ दिन तक यज्ञ कराया। जन्म दिवस पर पूर्णाहुति के उपरान्त स्वा० विवेकानन्द, स्वा० शिवानन्द जी, माता प्रभावती जी, आचार्य प्रियव्रत जी, आचार्य सुखदेव विद्यावाचस्पति, पं० योगेन्द्रपाल शास्त्री, पं० शिव दयालु जी, पं० जयदेव विद्यालंकार, श्री जगदीश मुनिजी आदि ने हार्दिक शुभ कामना तथा आशीर्वाद प्रदान किया।

—अमृतसर के श्री मथुरादासजी आर्योपदेशक ने २१ मार्च को महात्मा आनन्द स्वामी जी से वानप्रस्थ की दीक्षा ली।

—आर्यसमाज ब्रह्मपुरी मेरठ के श्री चन्द जी प्रधान, श्री प्रेमप्रकाश जी मंत्री, श्री ब्रजभूषण जी कोषाध्यक्ष व श्री बालकृष्ण जी पुस्तकाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

—एक वर्ष तक विदेशों में वैदिक नाद गुंजाने के बाद पूज्य स्वामी श्री जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती का भारत में पहला व्याख्यान आर्यसमाज रेणुकूट के तत्वावधान में आयोजित आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह में होने जा रहा है। उस समारोह के अवसर पर योग-शिविर भी लगाने जा रहे हैं।

—उज्जैन। स्थानीय उज्जैन आर्यसमाज के वार्षिक निर्वाचन। लाला अमरनाथ प्रधान व श्री हुकुमतराय शर्मा और चरणदास जी, उपप्रधान श्री यादव कुमार आर्य।

—३१ मार्च को सभी आर्यसमाजें अपने यहां अपने यहां आर्यसमाज स्थापना दिवस उत्साह से मनाएं। सभाएं करें, साहित्य बांटें और वेद का सन्देश गुंजाएं !

## जन-ज्ञान साप्ताहिक के संबंध में आवश्यक सूचनाएं

१. बिना किसी पूर्व घोषणा के हमने जन-ज्ञान साप्ताहिक का प्रकाशन १४ फरवरी से आरंभ कर दिया है।

२. जन-ज्ञान (मासिक) के सभी सदस्यों को जन-ज्ञान साप्ताहिक का सदस्य बना लिया गया है। और उन का शुल्क जितने समय का मासिक का जमा था, उतने समय के लिए साप्ताहिक का मान लिया गया है।

३. जन-ज्ञान (मासिक) नियमित रूप से प्रकाशित होता रहेगा। अतः उसका शुल्क भी १५ रु० ही रहेगा। पर जो पुराने सदस्य जन-ज्ञान (मासिक) भी मंगाना चाहें वे तुरंत हमें केवल १० रु० और भेज दें। हम १० रु० में उन्हें जन-ज्ञान (मासिक) का सदस्य बना लेंगे। यह सुविधा ३१ मार्च, १९७६ तक के लिए रहेगी।

४. जन-ज्ञान (साप्ताहिक) का वार्षिक शुल्क २० रु० रहेगा। ६ मास का शुल्क १२ रु० होगा।

५. जन-ज्ञान (मासिक) के आजीवन सदस्यों को मासिक पत्र नियमित भेजा जाएगा। वे २० रु० भेजकर साप्ताहिक के सदस्य बन सकते हैं।

६. जन-ज्ञान (साप्ताहिक) का आजीवन शुल्क ३०१ रु० रखा गया है पर १५ मार्च, १९७६ तक २५१ रु० भेजने वालों को साप्ताहिक का आजीवन सदस्य बना लिया जाएगा।

७. साप्ताहिक प्रति रविवार को प्रकाशित होगा। और बुधवार को कार्यालय से भेज दिया जाएगा।

८. शुल्क भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या, पूरा नाम व पता कूपन पर स्पष्ट लिखें। साथ ही यह भी स्पष्ट लिखें कि आप साप्ताहिक, मासिक या अंग्रेजी जन-ज्ञान में से किसका शुल्क भेज रहे हैं।

९. जो व्यक्ति या आर्यसमाजें १२० रु० वार्षिक ३१ मार्च तक भेजेंगे। उन्हें १० प्रति प्रति सप्ताह जन-ज्ञान साप्ताहिक की भेजी जाएंगी।

१०. साप्ताहिक में आर्यसमाजों के समाचार सादर आमंत्रित हैं।

११. सभी विद्वानों-कवियों की रचनाओं का भी हम स्वागत करेंगे।

—प्रबन्धक

**अधिक से अधिक साहित्य बांट कर आर्य समाज का सन्देश फैलाइए !**



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# स्वाधीनता संग्राम में आर्यसमाज का योग दान

श्री विद्याचरण शुक्ल

सूचना व प्रसारण मंत्री

●●●

हमारे इस देश के निर्माण में वैसे तो बहुत सी सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक संस्थाओं ने योगदान दिया है, लेकिन आर्यसमाज का योगदान कई दृष्टियों से बेजोड़ है। यह एक बड़ी ही सुखद बात है कि आज हम अपने देश में जो परिवर्तन लाना चाहते हैं, जिनके लिए हमारी प्रधानमंत्री और उनके सभी सहयोगी अपनी सारी शक्ति लगाकर प्रयत्न कर रहे हैं, उनकी शुरुआत आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द महाराज ने लगभग एक सौ वर्ष पहले की थी। जात-पात के भेद को मिटाना, समाज में फैली बाल-विवाह, बहुविवाह, वृद्ध-विवाह, दहेज आदि बुरी रस्मों को हटाना, शिक्षा के द्वार सभी के लिए खोलना और इसी तरह की बहुत-सी बातें हैं, जिनके लिए उस युगपुरुष स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज के रूप में एक जबर्दस्त आन्दोलन शुरू किया था। आज हम इन बुराइयों को समाज से दूर करने का पक्का इरादा किए हुए हैं। हमारे सामने बहुत-सी मुश्किलें भी आ रही हैं। जिस समय स्वामी दयानन्द ने पहले-पहले इनके खिलाफ आवाज उठाई थी, तब उनके सामने कितनी बड़ी मुश्किलें आई होंगी इसका अनुमान आज आसानी से लगाया जा सकता है। ब्राह्मणों के अलावा वेदों को पढ़ने का अधिकार किसी को नहीं था, लेकिन स्वामी दयानन्द ने शूद्रों और स्त्रियों तक को वेदों के अध्ययन का अधिकार दे दिया। यह एक बहुत बड़ा कदम था, सही मायनों में वैचारिक क्रांति थी। इसी तरह सदियों से जिन लोगों का स्पर्श भी बुरा समझा जाता था, उन्हें गले लगाने, उन्हें अपने से अलग न मानने की घोषणा जिस संन्यासी ने की वह निश्चय ही इस देश के दलित और पिछड़े हुए वर्गों का एक बड़ा मसीहा था। इन सामाजिक बुराइयों को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए स्वामी दयानन्द को कई लोगों का विरोध सहना पड़ा, गालियां भी खानी पड़ीं, कई बार उन्हें मारने के षड्यन्त्र भी रचे गए और आखिर एक षड्यन्त्र से उनकी मृत्यु भी हो गई, लेकिन उन्हें कोई अपने इरादे से नहीं डिगा सका। हर महान् व्यक्ति को, हर मसीहा को, हर उस हस्ती को जो समाज में नई क्रान्ति लाया है, इसी तरह शहीद होना पड़ा है, मानव समाज के इतिहास का यह दुःखदायी पहलू है।

## मानव मात्र की भलाई

स्वामी दयानन्द ने सारी मानव जाति की भलाई के लिए और उसकी उन्नति के लिए अपना जीवन अर्पित किया। आर्यसमाज के लिए उन्होंने जो दस नियम बनाए हैं वे धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, प्रगति के मील के पत्थर साबित हुए। नवें नियम में कहा गया है कि मनुष्य को सिर्फ अपने हित साधकर सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए बल्कि सब मनुष्यों के हित में अपना हित मानना चाहिए। आर्यसमाज का १०वां नियम तो और भी क्रान्तिकारी है और इसमें समाजवाद की आत्मा दिखाई देती है। इसमें कहा गया है कि व्यक्तिगत जीवन में आदमी को काम करने की पूरी स्वतन्त्रता है, लेकिन सामूहिक जीवन में व्यक्ति समाज के हितों के आधीन है।

एक और नियम, जिसने आर्यसमाज को एक जीवंत संस्था बनाया वह है उसका चौथा नियम, जिसमें कहा गया है कि सत्य को ग्रहण करना और असत्य को त्यागना हमारा परम कर्तव्य है। वैसे तो यह साधारण बात है और सभी ऐसा कहते भी हैं। लेकिन स्वामी दयानन्द ने सत्य को बुद्धि से परखने पर जोर दिया है। धर्म के मामले में भी बुद्धि की कसौटी पर हर बात को परखना, यह बात शायद स्वामी दयानन्द को छोड़कर दुनियां के किसी और धार्मिक नेता ने नहीं कही। तो सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने का अर्थ यही निकलता है कि एक ही बात पर जिद पकड़ कर न बैठा जाए बल्कि नये-नये ज्ञान को ग्रहण करने के लिए सदा तैयार रहना चाहिए। यही एक ऐसा तरीका है, जिससे समाज के विकास का सिलसिला बना रहता है। आर्यसमाज ने अपने पिछले एक सौ साल के इतिहास में अपने ऊपर इतिहास की धूल नहीं चढ़ने दी बल्कि वह जीवंत शक्ति बना रहा है। मैं समझता हूं कि इसका राज यह नियम ही है।

## नए युग का निर्माण

भारत के इतिहास में स्वामी दयानन्द ने एक युग का निर्माण किया है, विशेषकर उत्तर भारत में तो पिछले एक सौ साल में दयानन्द जी के विचारों की गूंज ही सुनाई देती रही। हिन्दी और उत्तर भारत की दूसरी भाषाओं के साहित्य में यह बात बखूबी देखी जा सकती है। अपनी संस्कृति के प्रति प्यार, अपने देश के लिए प्यार, सारी मानव जाति से प्यार, बहुविवाह, वृद्ध विवाह, दान-दहेज, मदिरापान जैसी सामाजिक बुराइयों का विरोध, ऊंच-नीच और छोटे-बड़े के भेद भाव मिटाकर सब लोगों



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को बराबरी का दर्जा देने की दृष्टि हमारी सब भाषाओं के साहित्य में मिलती है।

स्वामी दयानन्द नियति के नीले आवरण को उठाकर कितनी दूर तक देख सकते थे, इसका अन्दाजा इस बात से लग सकता है कि उन्होंने एक सौ साल पहले यह कहा था कि समस्त भारत में किसी एक मात्र भारतीय भाषा का प्रयोग होना चाहिए और इतना ही नहीं, उन्होंने हिन्दी को वह दर्जा दिया था, जो उसे आज मिला हुआ है। सारे भारत को एक सूत्र में बाँधने वाली भाषा के रूप में हिन्दी को पढ़ने-सीखने पर उन्होंने जोर दिया। उन्होंने अपने सारे ग्रन्थ हिन्दी में लिखे। उनकी मातृभाषा गुजराती थी, और भाषणों में, शास्त्रार्थों में वे यद्यपि संस्कृत का प्रयोग करते थे फिर भी उन्होंने राष्ट्र की भावनात्मक एकता को महसूस करते हुए अपने ग्रन्थों की रचना हिन्दी में की।

शिक्षा के क्षेत्र में तो स्वामी दयानन्द और आर्य-समाज का ऐतिहासिक योगदान है। इस देश में राष्ट्रीय शिक्षा का विकास स्वामी दयानन्द से ही माना जाता है। गुरुकुलों, डी० ए० वी० स्कूलों और डी० ए० वी० कालेजों की शिक्षा प्रणाली ने हमारे राष्ट्रीय जीवन को नई चेतना दी है। विशेषकर महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज ने जो काम किया है वह इतिहास में सोने के अक्षरों में लिखने लायक है।

## राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत : दयानन्द

स्वामी दयानन्द न केवल सांस्कृतिक और धार्मिक चेतना के अग्रदूत थे, उन्हें राष्ट्रीय चेतना का अग्रदूत भी कहा जा सकता है। सन् १८५७ के तुरन्त बाद जब, भारतवासियों के लिए ब्रिटिश शासन के खिलाफ कुछ कहना असम्भव दिखाई देता था, स्वामी जी ने यह घोषणा की कि "स्वदेशी शासन चाहे वह कितना भी बुरा हो, अच्छे से अच्छे विदेशी शासन की अपेक्षा कहीं अच्छा है।" स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग और विदेशी वस्तुओं के त्याग के लिए उन्होंने अपने शिष्यों और अनु-यायियों से आग्रह किया। वास्तव में स्वदेशी राज, स्वदेशी भाषा, स्वदेशी वस्त्र और स्वदेशी वस्तुओं पर एक साथ जोर देने के कारण उन्हें स्वदेशी आन्दोलन का जन्मदाता माना जाता है। उनका कहना था कि भारत की गरीबी का कारण विदेशी वस्तुओं का प्रयोग है। आज भी हमें स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार की जरूरत है क्योंकि विदेशी वस्तुओं के मोह के कारण न केवल हमारे घरेलू उद्योगों को नुकसान होता है बल्कि तस्करव्यापार जैसी भयानक बुराइयों को भी बल मिलता है।

हमारे देश के स्वाधीनता संग्राम में आर्यसमाज ने बहुत बड़ा योगदान दिया है। यह बात तो सभी जानते हैं कि अंग्रेजों के खिलाफ हमारी आजादी की लड़ाई जब शुरू हुई तो इस लड़ाई के पहले मैदान बने आर्यसमाजों के मन्दिर और डी० ए० वी० स्कूल और कालेज। लाला लाजपतराय और स्वामी श्रद्धानन्द तो कांग्रेस के अखिल भारतीय नेता रहे; उनके अलावा सैकड़ों-हजारों आर्य-समाजी कांग्रेस के कार्यकर्ता बनकर आज़ादी के आन्दोलन में शामिल हुए।

## आर्यसमाज का ही कार्यक्रम

आज हम एक दूसरी तरह की लड़ाई लड़ रहे हैं। यह लड़ाई है गरीबी से, पिछड़ेपन से। छोटे-बड़े के भेद-भाव को मिटाकर एक स्वस्थ समाज बनाने के काम में भी आर्यसमाज बहुत बड़ी सहायता कर सकता है। सच बात तो यह है कि आर्यसमाज को अपनी सारी शक्ति से इस काम में जुट जाना चाहिए, क्योंकि यह उसी का एक कार्यक्रम है।

प्राचीन काल में भारत ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में उच्च-तम शिखर पर था और इस दृष्टि से जगद्गुरु कहलाता था। आयुर्वेद, ज्योतिर्विद्या, गणित, दर्शन, नीति एवं तर्कशास्त्र आदि अनेक क्षेत्रों में भारत ने उस समय, जबकि आज की विकसित पाश्चात्य सभ्यताएं जन्मी भी नहीं थीं, अत्यन्त उच्च स्तर प्राप्त कर लिया था। वास्तव में आज ज्ञान-विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में विश्व ने जो प्रगति की है उसकी पीठिका, भारत की प्राचीनकाल में इस दिशा में की गई उपलब्धियाँ हैं। सौभाग्यवश, इस ज्ञान-विज्ञान का अक्षय भण्डार संस्कृत के वाङ्मय में अब भी सुरक्षित है। अतः विज्ञान से सम्बन्धित तकनीकी शब्दा-वली का एक तरह से अजस्र स्रोत इस वाङ्मय में विद्यमान है और सभी भारतीय भाषाएं बड़ी आसानी से इस अपार कोष से लाभान्वित हो सकती हैं।

## संस्कृत पठन-पाठन

इसके अतिरिक्त, संस्कृत साहित्य का स्थान विश्व साहित्य में बेजोड़ है। विदेशी आलोचकों और साहित्य-कारों ने भी इस तथ्य को स्वीकारा है। संस्कृत वाङ्मय की इस महानता को देखते हुए और आज भारतीय भाषाओं के विकास एवं ज्ञान-विज्ञान के उन्नयन की दृष्टि से उसकी उपादेयता को देखते हुए यह जरूरी है कि संस्कृत पठन-पाठन पर बहुत जोर दिया जाए। सम्भवतः आर्यसमाज के मनीषियों को इस बात का एहसास था। वे स्वयं तो संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् थे ही, उसके प्रचार-प्रसार पर भी उन्होंने उतना ही बल दिया था। अतः आज देश के इस महान् संगठन का नेतृत्व करने वाले

(शेष पृष्ठ २८ पर)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—श्रीमती ललिता शास्त्री

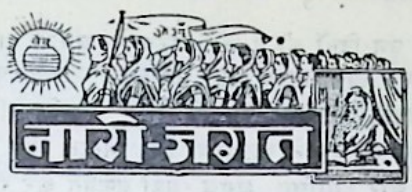


# आर्य महिलाओं का दायित्व

★ ★ ★

आर्यसमाज और उसके संस्थापक महर्षि दयानन्द के विश्व और भारतीय समाज पर अनन्त उपकार हैं, परन्तु उन्होंने भारतीय नारी समाज के उत्थान के लिये जो महान् प्रयास किया है, वह स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज जब कार्य क्षेत्र में उतरे उस समय भारतीय समाज में नारी की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। शास्त्रों की दुहाई देकर न केवल उसे वेद-शास्त्रों, गायत्री, संस्कार तथा यज्ञोपवीत आदि से ही वंचित कर रखा था, बल्कि उसे साधारण शिक्षा देना भी अनर्थ माना जाता था। बाल विवाह, वृद्ध-विवाह तथा बहु विवाह ने लाखों करोड़ों नारियों के जीवन को नरक बना रखा था। उन्हें विधवाओं के रूप में घोर अपमान के साथ सारा जीवन आहें भरते बिताना पड़ता था। विशेष खेद की बात यह है कि नारी के साथ यह सब अन्याय-अत्याचार धर्म की आड़ में हो रहा था।

स्वामी दयानन्द ने उस समय घोषणा की कि नारी को सब क्षेत्रों में पुरुष के समान अधिकार और अवसर मिलना चाहिए। उन्होंने वेद के द्वार नारी के लिए खोल दिये। उसके लिये सब संस्कारों और यज्ञोपवीत का समर्थन किया। उन्होंने सत्यार्थ-प्रकाश में लिखा—

"वह कुल धन्य ! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान् ! जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान् हो। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है उतना किसी से नहीं।"

शिक्षा के प्रकरण में स्वामी जी ने लिखा—

"इसमें राजनियम और जाति नियम होना चाहिए कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे अपने लड़कों और लड़कियों को घर में न रख सकें, पाठशाला में अवश्य भेज दें। जो न भेजे वह दण्डनीय हो।" स्वामीजी ने गार्गी और कैकेयी आदि के उदाहरण देकर लिखा है कि पुरुषों की भांति ही स्त्रियां भी वेद शास्त्रों, युद्ध विद्या तथा व्यवहार विद्या में निपुण हों।

स्वामी जी ने सत्यार्थप्रकाश में ही देश की पराधीनता पर वेदना प्रकट करते हुए उसका एक मुख्य कारण अस्वयंवर विवाह को भी बताया है। उन्होंने विदेशी राज्य तथा रहन-सहन आदि का भारी खण्डन करते हुए भी उनकी इन बातों की अपार प्रशंसा की : "यूरोपियनों का बाल्यावस्था में विवाह न करना, लड़का-लड़की को विद्या सुशिक्षा करना कराना, स्वयंवरविवाहआदि।" उन्होंने विवाह प्रकरण मेंस्पष्ट लिखा कि"स्वयंवर की रीति आर्यावर्त में परम्परा से चली आती है, वही विवाह उत्तम है। लड़के लड़की के आधीन विवाह होना उत्तम है। विवाह में मुख्य "प्रयोजन वर और कन्या का है माता पिता का नहीं।"

स्वामी जी के इन सब लेखों से स्पष्ट है कि नारी की शिक्षा तथा स्वाधीनता के विषय में उनके विचार कितने स्पष्ट और क्रान्तिकारी थे। उनके जीवन में एक घटना आती है कि एक बार रास्ते में जाते हुए एक मन्दिर के चबूतरे पर खेलती ६ वर्ष की बालिका को देखकर उन्होंने अपना मस्तक झुकाया। साथी शिष्य को भ्रम हुआ कि सम्भवतः स्वामी जी ने मन्दिर के सामने मस्तक झुकाया है। पूछने पर स्वामी जी ने कहा कि मातृशक्ति की प्रतीक इस बालिका के सामने मेरा मस्तक झुका था।

आर्यसमाज ने जन्म से ही नारी उत्थान के लिए ठोस काम किया। बाल-विवाह तथा वृद्ध विवाह के विरुद्ध जबर्दस्त आन्दोलन चलाया। केन्द्रीय असेम्बली में बाल विवाह विरोधी सब से पहला कानून स्वामी जी के शिष्य श्री हरविलास शारदा ने ही बनवाया था, जो शारदा ऐक्ट के नाम से प्रसिद्ध है। विधवा विवाह चालू करने के लिए आर्यसमाजियों ने दिन रात एक कर दिया। पर्दा तथा दहेज आदि कुप्रथाओं का उन्होंने डट कर विरोध किया। कन्याओं की शिक्षा तो उनके कार्यक्रम का एक मुख्य भाग रही। जहां भी आर्यसमाज स्थापित होता या उसका भवन बनता, वहीं कन्या पाठशाला खोली जाती थी। उसी का फल है कि आज जहां भी आर्यसमाज मन्दिर हैं, उनमें सब जगह कन्याओं की शिक्षा संस्थायें चल रही हैं। वैदिक साहित्य तथा संस्कृत की उच्चतम शिक्षा देने के लिए लड़कों के गुरुकुलों के साथ-साथ बड़ी संख्या में कन्या गुरुकुल खोले गये। ऐसे कई गुरुकुल तो उत्तर प्रदेश में ही हैं, जिनमें हजारों कन्यायें पढ़ रही हैं।

इसी प्रसंग में यह भी याद रखना आवश्यक है कि नारी के उत्थान के लिए आर्यसमाजियों को रूढ़ियों में फंसे समाज से बहुत टक्कर लेनी पड़ी, भारी संघर्ष करना पड़ा। आरम्भ में तो प्रायः सभी जगह उन्हें सामाजिक बहिष्कार का भी सामना करना पड़ा। परन्तु वे सब कठिनाइयों तथा बाधाओं के बावजूद आगे ही बढ़ते गये और उसी का परिणाम है कि आर्यसमाज ने उनके विचारों और मार्ग को पूरी तरह अपना लिया है। आर्यसमाज की विचारधारा और पुरुषार्थ की यह अपूर्व विजय है।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज ने पिछले सौ वर्षों में इस दिशा में जो काम किया है, उस पर आप गर्व कर सकते हैं। समाज ने भी आपकी बहुत सी बातों को स्वीकार कर लिया है। अब आपको सोचना है कि आपका भावी स्वरूप और कार्यक्रम और भी अधिक प्रभावशाली हो। नारी उत्थान के क्षेत्र में ही अभी बहुत कुछ करना बाकी है। कन्याओं की साक्षरता की स्थिति अभी भी सन्तोषजनक नहीं है। विशेषत: ग्रामीण बालिकाओं की शिक्षा तो अभी बहुत ही पिछड़ी हुई है। वहां विशेष कार्य करने की योजना बनानी चाहिए। भारत वस्तुत: देहात में बसता है, वहां की नारी अशिक्षित और पिछड़ी ही बनी रही तो देश और समाज की प्रगति कैसे संभव होगी ? इसी प्रकार समाज में दहेज आदि की प्रथा भी विकट रूप धारण कर चुकी है। इसके लिए कुछ ठोस पग उठाने होंगे।

एक और सामयिक समस्या की ओर आपका ध्यान खींचना चाहती हूँ। हमारे देश में अन्य क्षेत्रों की भांति नारी-जीवन में भी पश्चिमी भोगवादी संस्कृति का प्रभाव बढ़ रहा है। वहां नारी स्वतन्त्रता के नाम पर स्वेच्छाचारिता तथा मर्यादाहीनता पनप रही है और विडम्बना यह है कि प्रगति के नाम पर नारी उसकी तरफ दौड़ रही है। परिवार और विवाह संस्था अब वहां टूट रहे हैं। इन बातों के दुष्परिणाम भी सामने आ ही रहे हैं।

आर्यसमाज एक सांस्कृतिक संस्था है। उसका कर्तव्य है कि शिक्षित नारी वर्ग में वह आधुनिकता के नाम पर इन उच्छृंखल चेष्टाओं को न आने दे। भारतीय नारी का शील, मर्यादा एवं आदर्श अनुकरणीय रहे हैं। उसी के आधार पर नारी जीवन में सन्तुलन बनाये रखना आवश्यक हैं। पश्चिम का ज्ञान-विज्ञान हम लें, उनकी सभी अच्छी बातों को ग्रहण करें, परन्तु उनकी बुराइयों को लेना तो फिर अन्ध परम्परा का शिकार होना है। हमें हीनता के संस्कार छोड़ने चाहियें, अपने समाज और संस्कृति के ऊपर गर्व रहना चाहिए। कुछ हमें पश्चिम से सीखना है तो कुछ उसे सिखाना भी है।

आर्यसमाज की प्रबुद्ध महिलायें इस विषय में यथेष्ट प्रयास करें और इसी दृष्टि से आर्यसमाज के भावी कार्यक्रम एवं रीति-नीति का निर्धारण हो।

बदली हुई परिस्थितियों में आर्यसमाज नारी उत्थान के क्षेत्र में पहले की तरह ही नेतृत्व रखे। महर्षि दयानन्द का महान् जीवन हमारा पथ प्रदर्शन करता रहे। महिला समाज उनके स्वप्नों के भारत के नवनिर्माण में अपनी भूमिका निभाता रहे, यही मेरी कामना और भावना है।

सत्यार्थ प्रकाश : २००) सैकड़ा
स्वामी जी का जीवन : १००) सैकड़ा

# आओ, तनिक प्रेरणा लें

बात उन दिनों की है जब भारत में अंग्रेजी राज्य था। एक विद्यालय में एक अंग्रेज अध्यापक पढ़ा रहा था। पढ़ाते समय जब देश की चर्चा चल निकली तो उन अध्यापक महोदय ने कह दिया कि "भारत तो मूर्खों का देश है और इसीलिए अंग्रेज यहां हुकूमत कर रहा है।" वह अभी शायद कुछ और भी कहता किन्तु तभी कक्षा में एक वाणी गूंज उठी "बस, अब आगे कुछ न कहिए। याद रखिए कि जब आपके पूर्वज जंगली थे तब भी हमारा देश कला-कौशल और संस्कृति में संसार का सिरमौर था। हमारी गुलामी का कारण अंग्रेज की बुद्धिमत्ता नहीं अपितु हमारी आपसी फूट है।"

अध्यापक महोदय की बोलती बंद हो गई। जानते हैं यह ठोस तथ्य और तर्क प्रस्तुत करने वाला बालक कौन था ? यह थे सुभाष चन्द्र बोस जो आज भी नेताजी के नाम से देश की श्रद्धा के पात्र है !

× ×

एक बंदी था काले पानी में। उसके गले में तख्ती लटका दी गई। जिस पर उसकी रिहाई की तिथि और सन् १९६० अंकित था। जेलर मुस्कराया और बोला "क्या तुम तब तक जीवित भी रह पाओगे ?" और तत्काल ही बंदी ने उत्तर दिया "मैं जीवित रहूँ या न रहूँ किन्तु इतना निश्चित है कि तब तक भारत में तुम्हारा (अंग्रेजों का) राज्य न रह पाएगा।"

जानते हैं यह साहसपूर्ण चुनौती १९१० ई० में अंडमान की काल कोठरी में से किसने दी थी। वह थे स्वातन्त्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर।

× ×

एक बालक की आंख में फोड़ा निकल आया था। औषध उपचार करने पर भी फोड़ा ठीक नहीं हो पा रहा था कि ग्राम के अनपढ़ वैद्य ने कह दिया कि यदि लोहे की सलाख को गरम करके फोड़े पर लगाया जाए तब ही यह फोड़ा ठीक हो सकेगा। बालक इस प्रकार की क्रिया के लिए तैयार हो गया। लोहे की सलाख गर्म की गई। गर्म सलाख वैद्य ने हाथ में ली तो उस फूल सरीखे कोमल बालक को देखकर कांप उठा और सलाख हाथ से नीचे गिर गयी।

तभी बालक बोला "क्यों क्या बात हो गई ? आप जल्दी कीजिए, सलाख ठंडी हुई जा रही है।"

वैद्य बोल उठा "बेटा, मैं ऐसा नहीं कर सकता।" बालक ने आवेशपूर्ण स्वर में कहा "लाओ सलाख ! मैं स्वयं ही फोड़े में भोंक लेता हूँ।" और यह कहते हुए वह लोहे की गर्म सलाख अपने नन्हें-नन्हें हाथों में संभाली और फोड़े में भोंक ली।

जानते हो यह बालक कौन था ? यह थे भारत के लौह पुरुष के रूप में इतिहास में विख्यात सरदार वल्लभभाई पटेल।

—नरेन्द्रपाल सिंह



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—दिग्दर्शनानन्द

'दुनिया रंग रंगीली बाबा दुनिया रंग रंगीली। यह बदलती है रंग, हर क्षण के संग—इसके विचित्र हैं ढंग। समय की बलिहारी है इसकी गति न्यारी है।'

सदानन्द छेड़ रहे थे तान, जिज्ञासानन्द सुन रहे थे लगाकर कान। सहसा ही डाल दिया मध्य में व्यवधान। बोल उठे 'अजी सूंड विहीन गणपति भगवान्। आज तो फूट रहा है आपके गर्दभ स्वर में भी कोकिला-सा मधुर गान। कुछ हमें भी तो बताइए, अपने इस अनोखे मूड का कारण तो समझाइए।'

'जिज्ञासानन्द जी, क्या बताएं, यों तो हम ठहरे एकान्त प्रेमी, किन्तु फिर भी यह दुनियां तो है जंजाल। इसमें फंसना भी है बुरा पर इससे निकलना भी है मुहाल। कितनी भी उलूकी मुद्रा अपनाएं, फिर भी ये नेत्र कुछ न कुछ देखने से आते नहीं बाज। जो कुछ देखा है वही है मेरे इस नए मूड का राज। समझ में नहीं आता कि जो कुछ पिछले सप्ताह में देखा है वह सत्य है या सपना। या तो लोग ही बदल गए हैं अथवा दृष्टि दोष है अपना।

अजी, कुछ तो बताइए कि माजरा क्या है? दिमागे हुज़ूर का हालाते हाजरा क्या है? जिज्ञासानन्द ने पुनः टेक लगाई और फिर अपनी वाणी की साइकिल को सहसा ही ब्रेक लगाई।

'तो सुनिए श्रीमान् दे ध्यान, उस दिन एक समारोह था। हम भी जा पहुंचे। क्योंकि आपको पता ही है कि धर्म-कर्म में थोड़ी बहुत तो रुचि हमारी भी है। लोगों ने देखा तो मंच पर बुलाए गए। हम भी पीछे जा बैठे। हमें अपने आगे एक मूर्ति विराजमान नजर आई। लगा कि आकृति कुछ जानी पहचानी है। केश विन्यास से तो मर्द ही नजर आई किन्तु आवाज सुनी तो लगा कि जनानी है। बहुत सोचती रही हमारी बुद्धि बेचारी। परन्तु वह तो जा रही थी मारी। अतः हम थोड़ा सा आगे बढ़े और ऐन पीछे जा विराजे। तब तक मंच पर हो रहे थे भजन और प्रवचन। अतः हमने हौले से कह दिया, नमस्ते श्रीमान् जी। उस आकृति ने 'ऐबाउट टर्न' किया तो उनके मुख को हमने निहारा। हमें देखते ही उनकी भृकुटि तन गई। एक मिनट घूरा और फिर अपनी पुरानी स्थिति में आ गई वह आकृति। और हम बैठे-बैठे सोचते रहे, अपनी याददाश्त के बस्ते टटोलते रहे और फिर हमें याद आया, ये तो वे ही हैं, उसी सद्जन की है बिटिया। जिसने सारा जीवन किया था मर्यादाओं की रक्षार्थ समर्पित। इस समाज को ही अर्पित।

हम बैठे-बैठे समय का गर्द गुबार देखते रहे। तभी मंच से उनका नाम घोषित किया गया और फिर हमने सुना प्रवचन नर-नारी समानता से भरा पूरा। वह बोल रहीं थीं 'अब नर-नारी को नहीं कुचल सकता। यह है ऐसा वर्ष जिसमें होना है महिलाओं का उत्कर्ष। नारियों की प्रगति का रथ अब चलेगा सरपट।'

बस 'सरपट' सुनते ही हम पुनः विचारों में खो गए। मन का कलम बोल उठा धन्य है देवी धन्य। आप ठीक ही कह रही हैं। दरअसल आपका तो सर पट हो ही गया है। क्योंकि कटा कर सिर के आधे आधे केश। आपने धारा नारी से नर वेश। अपना भी स्वरूप गंवा रही हैं। नारी तो नहीं लगतीं, किन्तु नर भी नहीं बन पा रही हैं। हम माथे पर धरे हाथ देखते रहे, उनकी शब्दावलि का उत्पात।

'इसमें है कौन सी नई बात! श्रीमान् सदानन्द जी महाराज बोले। जिज्ञासानन्द। हम तो ऐसे धोखे से कई बार दो चार हो चुके हैं। निवास स्थानों पर ही और सरे बाजार भी। उस दिन हम थे कनाट प्लेस में खड़े। बस के इन्तजार में अड़े। तभी एक जोड़ा आया। उनमें से एक हमारे सामने आकर बोले 'नमस्ते जी।' हमने निहारा और अचानक हमारे मुख से निकल पड़ा 'जी देवी जी, मैंने आपको पहचाना नहीं।' फटाक से उनकी जबान की गन दगी और वाणी गूंज उठी 'क्या भांग खाई है जो हमारी सूरत भी पहचान में नहीं आई है। हम हैं प्रभु-देव। आपसे वर्षों की जान पहचान है और आप हैं कि हमें पहचानने में भी भूल कर रहे हैं। हमने कहा भाई साहब, यह भी क्या कमाल है, आपके तो लम्बे-लम्बे हैं बाल। मूंछें दाढ़ी पूर्णतः सफाचट। इसीलिए हमें हुआ है धोखा। और वह बोले जरा दुनिया के साथ चलिए। समय के साथ बदलिए। और उन्होंने परिचय कराया अपने साथ वाले से 'ये हमारे.....' हम तत्काल बोल उठे 'नमस्ते भाई साहब।' फिर क्या था वे तन गए और कहने लगे यह भी अच्छा मखौल है। आप नहीं जानते गत वर्ष हुआ है हमारा विवाह यह तो हमारी श्रीमती जी हैं।' हमने अपने माथे पर हाथ रख लिया क्योंकि उनके कटे हुए थे केश हमने भी उस नारी को समझा नर। यह सब श्रेष्ठ परिवारों की दशा है, हमें थी क्या खबर। मन ही मन कहा उस लखनवी कविता का वाक्या 'काकू धोखा हुई गवा।' तभी हमारी बस आई और हम उसमें हो सवार बिना उस नव दम्पत्ति को किए नमस्कार वहां से फूट लिए।



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'जी जिज्ञासानन्द जी ! वह तो होंगे कोई अंग्रेजी सभ्यता के पुतले। हमने जिनकी चर्चा की वह तो वैदिक सभ्यता का करती हैं अपने भाषणों में जाप। शायद अब कुछ समझे हों आप।'

तभी जिज्ञासानन्द पुनः बोल उठे 'भाई ! दुनिया राकेट की चाल चल रही है और आप अभी भी छकड़े को ही पकड़े हैं। हमने ऐसे कई अन्य चमत्कार देखे हैं। आप चाहें तो ऐसा ही एक और भी बता दें।

सदानन्द बोले 'जी ! अवश्य सुनाइए। तनिक हमारा भी ज्ञान बढ़ाइए।'

तो सुनिए। जिज्ञासानन्द बोलते गए 'हमारे एक परिचित हैं। गाहे बगाहे उनसे मुलाकात होती रहती है। बड़े साधु प्रकृति के हैं बेचारे। अनेक बार उनसे भी मिले तो उनकी देवी जी के भी दर्शन किए हैं। किन्तु अभी पिछले दिनों हमने एक दिन एक चमचमाती कार से उतरते हुए राजधानी के एक रंगीन बाजार में उनकी देवी जी को देखा। मुख देखा तो लगा कि वही हैं। किन्तु फिर गौर किया तो प्रतीत हुआ कि वह भी देवी से मेम साहब बनने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं। क्योंकि पहले तो उनकी पीठ तक लटकती थी वेणी किन्तु अब उस पर भी चल गई है नसैनी। लम्बी धवल केश राशि अब जा चुकी है तराशी। अब रह गई है केवल कांधे तक लट। न जाने कैसे हुई है यह खटपट। हमने हिम्मत की और आगे बढ़कर उन्हें नमस्कार किया। उन्होंने भी कुछ सकुचाते कुछ मुस्कराते हुए 'नमस्ते जी' में उत्तर दिया। हम तो ठहरे चिर उपद्रवी इसलिए पूछ ही लिया 'जी, यह नया वेश और केश विन्यास कैसा।' वह बोली आप नहीं जानते कि मैं अब युवतियों के भावी जीवन की मार्ग-दर्शिका हो गई हूँ। सही अर्थों में उपदेशिका हो गई हूँ। जैसा हमारा काम, वैसी ही है अब छवि भी ललाम। अच्छा तो अब चलती हूँ। है तो सायंकाल इसलिए गुड ईवनिंग ही कहती, किन्तु आप तो प्राचीनता के दास हैं इसलिए आपसे तो कहूँगी केवल 'प्रणाम'। और फिर वे आगे बढ़ गईं।'

जिज्ञासानन्द को बीच में ही रोकते हुए सदानन्द ने उनकी वाणी की सहस्र धारा को रोकने के लिए अपने वाक्यों का भीम पंजा या गोड़ा जमाया और बोले क्या अब भी समझ में नहीं आया कि हमने क्यों था यह स्वर गुंजाया कि 'दुनिया रंग रंगीली बाबा—दुनिया रंग रंगीली। यह बदलती है रंग-हर क्षण के संग। समय की है बलिहारी—इसकी है गति न्यारी।'

(पृष्ठ २४ का शेष)

लोगों और उसके सदस्यों का यह बड़ा दायित्व है कि वे संस्कृत पठन-पाठन और उसके प्रचार-प्रसार पर जोर दें, ताकि सारे देश में संस्कृत के माध्यम से भारतीय भाषाएं न केवल एक-दूसरे के नजदीक आयें और हिन्दी का एक सार्वदेशिक भाषा के रूप में प्रांजल रूप निखरे, अपितु प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान जन-जन तक पहुंचे।

संस्कृत के पठन-पाठन पर जोर देने का एक और भी महत्वपूर्ण कारण है। आप देख रहे हैं कि आज पाश्चात्य देशों की मशीनी एवं तकनीकी प्रगति से पाली-पोसी भौतिक सभ्यता ने मानव जीवन में अनास्था, विद्रूपता और उच्छृंखलता भर दी है। उसका प्रभाव भारत के युवा वर्ग पर भी पड़ा है। अतः यह जरूरी है कि हम संस्कृत के माध्यम से अपने महान् जीवन-मूल्यों, अपनी स्वर्णिम संस्कृति, दार्शनिक धारणाओं एवं तात्विक तथा तार्किक मान्यताओं का दर्शन उन्हें कराएं, जो मनुष्य को अंधेरे से उजाले की ओर ले जाती हैं, असत्य से सत्य की ओर ले जाती हैं। और अन्ततः नश्वरता से अमरता की ओर ले जाती हैं। ऐसे उदात्त जीवन-मूल्यों की विरासत संस्कृत के पठन-पाठन से ही हमें उपलब्ध हो सकती है।

आर्यसमाजी इस सम्पदा को, इस अमूल्य धरोहर को घर-घर, जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लें। यदि हम ऐसा कर सकें तो भारत को नैतिक, आध्यात्मिक और भौतिक रूप से भी सशक्त और समृद्ध बनाने में हम सफल हो सकेंगे। यही नहीं, भारत जगद्गुरु के रूप में सम्पूर्ण विश्व के लिए एक बार फिर से सुख और सौभाग्य का मार्ग प्रशस्त करने में सफल होगा।

**(वाराणसी आर्य समाज शताब्दी समारोह पर भाषण)**

**पुराने सदस्य**

जन-ज्ञान (मासिक) का धन १०) तुरन्त भेजें : जिन का धन २९ मार्च तक प्राप्त नहीं होगा उन्हें मार्च का अंक ३१ मार्च को V.P. से(१७ रुपये की) भेजा जाएगा। कृपया रियायती शुल्क १०) तुरन्त भेज दें —संपादक

अच्छे से अच्छे ब्लाक
बनाने के लिए
प्रोसस सेंटर
५१४९-कस्साबपुरा
सदर बाजार दिल्ली-६
की सेवाएं सदा स्मरण रखें



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—प्री० रत्नसिंह एम. ए. द्वारा संग्रहीत

भूमिका से —१

# महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में क्या लिखा है ?

* * *

—आर्यों के सनातन वेदविहित मत की विशेषतः व्याख्या लिखी है, जिसको मैं भी यथावत् मानता हूं।

—मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाय। किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है।

—जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता।

—विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें। पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

—मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है। तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है। परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रखी है, और न किसी का मन दुखाना वा किसी की हानि पर तात्पर्य है। किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें।

—सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है। जो वह मनुष्यमात्र का हितैषी होकर कुछ जनावेगा उसको सत्य-सत्य समझने पर उसका मत संगृहीत होगा। यद्यपि आजकल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मतों में हैं। यदि ये पक्षपात छोड़, सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे से विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से बर्ते बर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे।

—विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने, जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है, सब मनुष्यों को दुःख सागर में डुबा दिया है। इनमें से जो कोई सार्वजनिक हित लक्ष्य में धर प्रवृत्त होता है, उससे स्वार्थी लोग विरोध करने में तत्पर होकर अनेक प्रकार विघ्न करते हैं। परन्तु "सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः" अर्थात् सर्वदा सत्य की विजय और असत्य की पराजय और सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है।

—"यतदग्रे विषमिव परिणामे अमृतोपमम्" यह गीता का वचन है। इसका अभिप्राय यह है कि जो-जो विद्या और धर्म-प्राप्ति के कर्म हैं वे प्रथम करने में विष के तुल्य और पश्चात् अमृत के सदृश होते हैं। जो-जो सब मतों में सत्य-सत्य बातें हैं वे वे सब में अविरुद्ध होने से उनका स्वीकार करके जो-जो मतमतान्तरों में मिथ्या बातें हैं उन-उन का खण्डन किया है।

—सब मतमतान्तरों की गुप्त वा प्रकट बुरी बातों का प्रकाश कर विद्वान् अविद्वान सब साधारण मनुष्यों के सामने रक्खा है जिससे सबसे सबका विचार होकर परस्पर प्रेमी होके एक सत्यमतस्थ होवें।

—यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूं तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूं वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मतोन्नति वालों के साथ भी वर्तता हूं। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में वर्तता हूं, वैसा विदेशियों के साथ भी, तथा सब सज्जनों को भी वर्तना योग्य है।

—जैसे पशु बलवान होकर निर्बलों को दुःख देते और मार भी डालते हैं। जब मनुष्य शरीर पाके वैसा ही कर्म करते हैं तो वे मनुष्य स्वभावयुक्त नहीं, किन्तु पशुवत् हैं। और जो बलवान् होकर निर्बलों की रक्षा करता है वही मनुष्य कहाता है और जो स्वार्थवश होकर परहानि-मात्र करता है, वह जानो पशुओं का भी बड़ा भाई है।

—जो मिथ्या बात न रोकी जाये तो संसार में बहुत से अनर्थ प्रवृत्त हो जायें।

—वाक्यार्थबोध में चार कारण होते हैं—आकांक्षा, योग्यता, आसत्ति और तात्पर्य। जब इन चारों बातों पर ध्यान देकर जो पुरुष ग्रन्थ को देखता है, तब उसको ग्रन्थ का अभिप्राय यथायोग्य विदित होता है।

—"आकांक्षा" किसी विषय पर वक्ता की और वाक्यस्थ पदों की आकांक्षा परस्पर होती है। "योग्यता"

(शेष पृष्ठ ३० पर)



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—बी० एस० बेदी

# स्वास्थ्य-सुधा

## मांस खाना हानिकारक

प्रकृति द्वारा मनुष्य की जो रचना हुई है उससे सिद्ध होता है कि मनुष्य शाकाहारी जीवों में आता है न कि मांसाहारी में।

मांसाहारी पशुओं के दांत नोकीले और लम्बे होते हैं जो मांस को चीरने के काम आते हैं। किन्तु शाकाहारी जीवों के दांत चपटे होते हैं जो वनस्पति को पीसने के काम आते हैं। मांसाहारी पशुओं के जबड़े नीचे से ऊपर हरकत करते हैं दायें-बायें नहीं। शाकाहारी पशुओं के जबड़े दायें-बायें हरकत करते हैं ताकि खुराक पीसी जा सके।

मांसाहारियों की आंतें बहुत लम्बी नहीं होती जबकि शाकाहारियों की आंतें बहुत लम्बी होती हैं। जन्म के समय मांसाहारी पशुओं की आंखें बन्द होती हैं परन्तु शाकाहारियों की आंखें खुली होती हैं। मांसाहारी पशु चाट कर पानी पीते हैं परन्तु शाकाहारी सांस के द्वारा खींचकर। मांसाहारी पशु एक टांग उठाकर मूत्र त्याग करते हैं व शाकाहारी झुक कर या बैठकर मूत्र त्याग करते हैं। इन तथ्यों से सिद्ध होता है कि मनुष्य शाकाहारी है न कि मांसाहारी।

शायद बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि मांस से शरीर की आंतें सड़ जाती हैं। मांस शीघ्र नहीं पचता और जानवरों के शरीर में तरह-तरह की बीमारियां होती हैं जो उनके मांस के द्वारा मनुष्य में आ जाती हैं। मांस व अण्डों के सेवन करने से शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता है? जब भी कोई व्यक्ति बीमार हो जाता है, डाक्टर उसे मांस व अण्डों के सेवन न करने के लिए कह देते हैं इससे सिद्ध हुआ कि मांस व अंडा शीघ्र नहीं पचता। कैलीफोर्निया के दो वैज्ञानिकों ने सिद्ध किया है कि अण्डे में कालस्ट्रोल नामक विष पाया जाता है जो हृदय रोग का एक प्रमुख कारण है।

डाक्टरों ने आगे लिखा है कि अण्डे खाने से रक्तचाप पैदा होता है और पाचन शक्ति खराब होती है। एक प्रसिद्ध डाक्टर ए० बी० मेक ने अपनी पुस्तक पेज १७३ में लिखा है कि अण्डे में कैल्शियम की बहुत कमी होती है इसलिए यह आंतों में जाकर सड़ांध पैदा करता है। यह सड़ने वाले कीटाणुओं को पैदा करता है और प्राणी मात्र के शरीर में बीमारियां पैदा करता है। लन्दन के प्रसिद्ध डाक्टर मि० हेग कहते हैं कि मांस में यूरिया एसिड नाम के दो विष पाये जाते हैं जो मनुष्य के शरीर में रोगों को बढ़ावा देते हैं। दो प्रसिद्ध अमेरिकी डाक्टरों, जिनके नाम डा० ए० वाचमन और डा० डी० एन० वर्नस्टीन हैं, ने सिद्ध किया है कि मांसाहारी पुरुषों की हड्डियां कमजोर होती हैं और शाकाहारियों की अधिक मजबूत होती हैं। पश्चिमी देशों में सैंकडों शाकाहारी सोसाइटियों की स्थापना हो रही है केवल अमेरिका में ही चार करोड़ से अधिक शाकाहारी व्यक्ति हैं और उनकी संख्या दिनोदिन बढ़ती जा रही है। फ्रांस के एक प्रसिद्ध डाक्टर किग्मन फोर्ड ने सिद्ध किया है कि अण्डे व मांस स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखा है कि यदि आप स्वस्थ जीवन व्यतीत करना चाहते हैं तो हरे शाक, सब्जियां, दूध, पनीर और फलों का अधिक प्रयोग करें। सप्ताह में एक बार उपवास अवश्य करना चाहिये। इससे आपका पेट साफ होगा जो जीवन शक्ति को बढ़ाने के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है और आप असाध्य रोगों से छुटकारा पायेंगे। जीवन को सफल बनाने के लिए प्रातःकाल शौचादि से निवृत्त होकर हल आसन, पद्मासन, भुजंगासन आदि करने चाहियें। इससे प्राणी मात्र स्वस्थ रहता है।

सादा भोजन करने से मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक रहता है और उसको डाक्टरों की आवश्यकता नहीं रहती।

(पृष्ठ २९ का शेष)

वह कहाती है जिससे जो हो सके, जैसे जल से सींचना। "आसत्ति जिस पद के साथ जिसका सम्बन्ध हो उसी के समीप उस पद का बोलना वा लिखना।

—"तात्पर्य" जिसके लिए वक्ता ने शब्दोच्चारण वा लेख किया हो उसी के साथ उस वचन वा लेख को युक्त करना।

—बहुत से हठी दुराग्रही मनुष्य होते हैं कि जो वक्ता के अभिप्राय से विरुद्ध कल्पना किया करते हैं, विशेषकर मत वाले लोग। क्योंकि मत के आग्रह से उनकी बुद्धि अन्धकार में फंस के नष्ट हो जाती है।

—एक मनुष्य जाति में बहका कर, विरुद्ध बुद्धि कराके, एक दूसरे को शत्रु बना लड़ा मारना विद्वानों के स्वभाव से बहिः है।

—सर्वात्मा सर्वान्तर्यामी सच्चिदानन्द परमात्मा अपनी कृपा से इस आशय को विस्तृत और चिरस्थायी करे॥

**इस अंक से हम सत्यार्थ प्रकाश के सारगर्भित वाक्य क्रमशः प्रकाशित करना आरंभ कर रहे हैं हम चाहते हैं कि इन्हें पढ़कर सभी को यह अमर ग्रंथ पढ़ने की प्रेरणा प्राप्त हो।**

**—संपादक**



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## कुछ सुझाव

आदरणीय बन्धु,

सादर नमस्ते।

जनज्ञान का साप्ताहिक संस्करण मिलना आरम्भ हो गया। अभी तक तीन अंक मिले हैं। आपका यह प्रयास सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। सामग्री आकर्षक एवं ज्ञान-वर्धक होती है। जनज्ञान अन्य साप्ताहिक प्रकाशनों की भांति अधिकाधिक परिवारों में पहुंचे, इसके लिये हमें सतत प्रयास करते रहना चाहिये और और यदि हम निष्ठावान् बनकर प्रयास करें तो एक दिन वह भी आ सकता है जब यह धर्मयुग व साप्ताहिक हिन्दुस्तान के समकक्ष स्थान प्राप्त कर सके। इसके लिये मेरे अपने कुछ सुझाव हैं; यदि सम्भव हो आप उन पर विचार करें।

यह सर्वमान्य तथ्य है कि आर्य परिवारों के बच्चे प्रायः आर्य विचारधारा से अनभिज्ञ रहते हैं। इसके अनेक कारण हैं। उन कारणों में जहां माता-पिता द्वारा बचपन में बच्चों की ओर वांछित ध्यान न दिया जाना है, वहाँ आजकल के वातावरण का भी प्रभाव है, जो वैदिक धर्म के ज्ञान से शून्य है।

साधारणतया एक तो आर्य परिवारों में आर्यसमाज से सम्बन्धित पत्रिकायें आती ही नहीं और यदि कहीं आती भी हैं तो उन्हें बच्चे पढ़ते नहीं, इस कारण उन पर संस्कार भी नहीं पड़ते। हमारी पत्रिकायें अधिक से अधिक बच्चों के हाथों से निकलें, हमें इसके लिये प्रयास करना पड़ेगा। इसके लिये सामग्री परिवार की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली हो ताकि उस सामग्री के पढ़ने के लालच में परिवार के बच्चे धर्म सम्बन्धी बातों को भी यदा कदा पढ़ते रहें और उनके मन पर धीरे-धीरे संस्कार जमते चले जायें।

आजकल समाज में उन्नति और मनोरंजन के लिये परिवार में समाचार पत्र तथा अन्य पत्र-पत्रिकायें तो आती हैं पर धर्म सम्बन्धी पत्रिकायें बहुत कम परिवारों में आती हैं। चूंकि इन पत्रिकाओं में बच्चों, महिलाओं की रुचि के अनुकूल तथा उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सामग्री नहीं मिलती, अतः वे इन्हें देखते तक नहीं। अतः यदि आप अपने साप्ताहिक प्रकाशन को उन आवश्यकताओं के अनुरूप मोड़ दे सकें तो सम्भव है इसका प्रचार प्रसार अधिक हो सके।

यह सत्य है कि अधिकतर परिवार अनेक पत्रिकायें नहीं खरीद सकते किन्तु वे आवश्यकतानुसार, जिसमें पदों व कम्पीटिशन आदि की सूचनायें रहती हैं, पत्र पत्रिकायें ले लेते हैं। अतः इनकी पूर्ति के लिये आपको ध्यान देना चाहिये, ताकि सर्वांश में नहीं तो न्यूनांश में उनकी पूर्ति हो सके और पूर्ति के उद्देश्य से परिवार के समस्त सदस्य इस पत्रिका को पढ़ने में रुचि लेने लगें। निम्न प्रकार की सामग्री इस उद्देश्य की पूर्ति कर सकती है—

१. पत्रिका का मुख्यांश वैदिक धर्म के सिद्धान्तों से भरा हो।

२. पत्रिका में विज्ञान के बढ़ते चरणों से सम्बन्धित लेख हों।

३. योगासन एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी लेख हों, जिनमें यह भी हो कि किस आसन से किस रोग की चिकित्सा हो सकती है।

४. योग की ओर लोगों की रुचि बढ़ रही है, किन्तु योग के सम्बन्ध में लोगो को ज्ञान नहीं है, अतः इस विषय पर लेख अनुभवी व्यक्तियों द्वारा लिखे हुए प्रकाशित होने चाहिएं।

५. महिलाओं व बच्चों की प्रतिभा बढ़ाने के लिये उनसे सम्बन्धित आदर्श पारिवारिक लेख प्रकाशित हों।

६. सामान्य ज्ञान बढ़ाने वाले लेख हों।

७. विभिन्न संस्थाओं, विश्वविद्यालयों तथा भारत सरकार के कार्यालयों में रिक्त पदों की सूचनायें दी जा सकती हैं।

८. उच्च शिक्षा में प्रवेश के निमित्त होने वाली परीक्षाओं की सूचनायें देनी चाहियें।

९. आर्य परिवारों की समस्यायें दी जा सकती हैं।

१०. बच्चों के लिये पत्र-मित्र बनाने के लिये कभी-कभी एक स्तम्भ में पते प्रकाशित किये जा सकते हैं।

इस प्रकार पत्रिका में समय-समय पर उपर्युक्त आशयों की पूर्ति हेतु लेखों का वर्गीकरण करके उन्हें प्रकाशित किया जाये तो 'जनज्ञान-साप्ताहिक' एक परिवार की पत्रिका के रूप में उभर सकेगा तथा अन्य पत्रिकाओं को बन्द करके इस पत्रिका को खरीदा जा सकेगा, क्योंकि यह परिवार में सभी की आवश्यकता की पूर्ति करने वाली पत्रिका होगी।

चन्नपुरी (यू०पी०) —सत्यप्रकाश गुप्त



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

माननीय भ्राता जी,

साप्ताहिक "जनज्ञान" को देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। इतना सुन्दर कागज, छपाई, विषयों की उच्चता तथा विविधता। धन्य है आपकी प्रतिभा तथा लगन। विस्मय होता है। इस भौतिकवाद के युग में आध्यात्मिकता की गंगा आप कैसे बहा रहे हैं! भगीरथ का नाम तो पुराणों में ही आया है। पर आप का परिश्रम तो प्रत्यक्ष देख रहे हैं।

नई दिल्ली —प्रकाशवती शास्त्री

सम्पादिका जी, नमस्ते

'जनज्ञान' साप्ताहिक के दो अंक पढ़ चुका हूं। अंक पाकर एक कमी की पूर्ति का अनुभव हुआ। मुख पृष्ठ तथा अन्तिम पृष्ठ पर महापुरुषों के चित्र तथा उनका जीवन चरित्र एक प्रेरणादायी कार्य है।

हिन्दू समाज में विभिन्न रीति-रिवाज प्रचलित हैं तथा हमारे सामने उनका परिष्कृत रूप आता है। आपके पत्र से भी आशा की जाती है कि समय समय पर पर्वों के बारे में सही रूप की जानकारी अवश्य दी जायेगी।

भगवान् से यही प्रार्थना है कि यह साप्ताहिक शीघ्रातिशीघ्र दैनिक का रूप धारण करे।

हापुड़ —विजेन्द्रकुमार

## क्या आप को पुरोहित चाहिए?

हमारे विद्यालय में शिक्षा समाप्ति के पश्चात् स्नातक आर्य समाजों में पुरोहित तथा उपदेशक के रूप में प्रचार कार्य में योगदान करते हैं। इस प्रकार हमारे सैकड़ों स्नातक विभिन्न समाजों तथा सभाओं में योग्यतापूर्वक प्रचार कर रहे हैं। इस वर्ष भी अप्रैल में शिक्षा समाप्त कर हमारे सात स्नातक प्रचार क्षेत्र में पदार्पण करेंगे।

अतः जिन समाजों एवं सभाओं को अपने यहां पुरोहितों तथा उपदेशकों की आवश्यकता हो वे तुरन्त निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें, जिससे कि उन्हें योग्य पुरोहित तथा उपदेशक दिये जा सकें।

स्नातक सीमित हैं। अतः जिनके पत्र प्रथम प्राप्त होंगे, उन्हीं को हम पुरोहित तथा उपदेशक दे सकेंगे।

अतः तुरन्त पत्र व्यवहार करें।

सत्यप्रिय शास्त्री, एम. ए.
प्रधानाचार्य
दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय
हिसार (हरयाणा)

मान्यवर मन्त्री जी,

आप द्वारा प्रेषित वेदों का भाषाभाष्य प्राप्त हुआ। आपं सबको और दयानन्द संस्थान को असंख्य धन्यवाद। आपके प्रयास से हम अपने आपको उपकृत अनुभव कर रहे हैं। भाषा-भाष्य के बिना हिन्दी भाषी वेदार्थ नहीं समझ सकते। आपने उसे सरल बनाकर पुण्य अर्जित किया है।

इस महान् कार्य के निमित्त मैं आपको पुनः धन्यवाद देता हूं। आर्यसमाज स्थापना शताब्दी के अवसर पर यह वेद भाष्य प्राप्त कर हम सब बहुत प्रसन्न हुए हैं।

डिगबोई (असम) सूर्यदेव सिंह

महोदय

साप्ताहिक जन-ज्ञान के उन सभी लेखकों को मेरा सादर प्रणाम निवेदित करते रहें जो अज्ञान में भटकते मानव समाज को अपने नित्य के शुभ चिन्तन और स्वाध्याय से परमानन्द का मार्ग दिखाते हैं। उससे भी पूर्व सादर प्रणाम आपको है जो अहर्निश अभावों की धधकती ज्वाला में प्रवेशकर लाखों पथ भूले मानवों को नित्य नवोत्साह और प्रभु भक्ति का मार्ग दिखाते हैं। आपके द्वारा संचालित इस ज्ञान यज्ञ से भ्रान्तों को सन्मार्ग, निबुद्धियों को सद्बुद्धि और पाखण्डियों का सद्विवेक प्राप्त हुआ है। वेद प्रकाशन् तथा वेद प्रचार में आपकी अद्वितीय निष्ठा देखकर रोमांच हो उठता है।

सा० जन-ज्ञान का हर पृष्ठ ज्ञानामृत से परिपूर्ण एवं संग्रहणीय है। इसके प्रचार के लिए मैं सदा यत्नशील रहूँगा।

आपके सभी सद् प्रयास श्लाघ्य एवं स्तुत्य हैं। इनकी जितनी भी प्रसंशा की जावे थोड़ी है।

वस्तुतः आप सरीखे उदभट कुछ और लोग हों तो विश्व भर में वैदिकता की पावन त्रिवेणी प्रवाहित हो सके। भू मंडल से अज्ञान, अविवेक और अभाव नष्ट होकर जन-ज्ञान, सत्य और विवेक की गंगा-यमुना प्रवाहित हो उठे। आपका श्रेय सफलता के शृंगों को चूमे यही कामना है।

—वेदप्रकाश

आदरणीया दीदी,

जन-ज्ञान साप्ताहिक का प्रकाशन एक साहसिक कदम है। कोरा ज्ञान मानवता के लिए महान् अभिशाप है। इसीलिए आज अधिकतर उपदेश मंच की सीमा से बाहर प्रभाव शून्य हो जाते हैं। आपका कार्य आर्य जगत् के कल्याण हेतु है। आलोचनाएं कितनी भी हों आप इस जागरण की डोर को खींच न लेना।

आपका अनुज
रामेश्वर हिमांशु एम० ए०
ग्राम हरिपुर, जिला सहारनपुर



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

## आभार प्रदर्शन

पंडिता राकेश रानी जी, सादर नमस्कार

हमारी प्राचीन संस्कृति के सूचक यह महान् ग्रन्थ (वेद) अधिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुंचें यही हमारा लक्ष्य होना चाहिए। इन प्राचीन धरोहर को आपने जिस सुन्दर रूप में हिन्दी में प्रस्तुत किया है उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

अधिक से अधिक लोग इनको पढ़ कर समझें कि हम क्या थे, क्या हो गये हैं, और क्या हैं तथा हमें क्या बनना है। हम अपने आप को समझें और पहचानें यही हमारी सबसे बड़ी सफलता होगी। आप जो यह कार्य कर रही हैं उससे मुझे यह पूर्ण विश्वास है कि वह दिन दूर नहीं जब स्वामी दयानन्द का स्वप्न पूर्ण होगा कि हम आर्यों का प्रथम कर्तव्य वेदों का पढ़ना-पढ़ाना और उसी के अनुसार कर्म करना है।

इस अमूल्य कार्य के लिए जो आप कर रही हैं ईश्वर आपमें वह शक्ति दें जिसके द्वारा यह पूर्ण होकर रहे।

—प्रमोद कुमार
अमरोहा, जि० मुरादाबाद

## जन ज्ञान-ज्ञान की ज्योति

मान्यवर श्री, पं० भारतेन्द्र नाथ जी !

मैं आप के कार्य से बहुत प्रभावित हूं। आप का शताब्दी विशेषांक निसन्देह ही एक महान् प्रभावशाली कृत्य है जो सबके लिये सराहनीय है। मैं समझता हूं कि आर्य जगत् में अनेकानेक पत्र-पत्रिकाओं में आपका 'जन-ज्ञान' आकर्षक और सर्वोत्कृष्ट है। सभी प्रकार की आर्यो-चित सामग्री से पूर्ण—"जनज्ञान" अपने नाम के अनुसार जन-मानस में ज्ञान ज्योति प्रकाशित कर रहा है। जो एक बार भी इस पत्र को हाथों में लेता है—वही प्रभावित हो जाता है।

—यह सब श्रीमती माता जी 'सम्पादिका' का ही तप है। आप जैसे आदर्श-आर्य पति-पत्नियों को परमेश्वर चिरायु करें—जिससे महर्षि का अधूरा कार्य पूर्ण होकर के संसार के कोने-कोने में वैदिक धर्म का प्रचार होवे। मेरी सभी नर-नारियों से विनय है कि 'जन-ज्ञान' मासिक को सब पढ़ें, आर्य सिद्धान्तों को समझने में सफलता प्राप्त होवेगी।

'ज' न-जन के मानस-पटाका, तू अज्ञान हरे।
'न' र हो या नारी सबके, कलुषित व्यवहार जरें॥
'ज्ञा' न देकर सब को, श्रेय पथ पर आरूढ़ करें।
'न' मः तुझे शत वार मेरा, 'जनज्ञान' रहे चिरायु हरे॥

—स्व० ब्रह्मानन्द (युवक संन्यासी)
आर्य युवक संघ हरफरी (बदायूँ)

## प्रेरणादायक पत्रिका

आदरणीय भारतेन्द्र नाथ जी, नमस्ते !

मैं बहुत महीनों से जनज्ञान पढ़ रहा हूं ! निश्चय ही यह एक सारगर्भित और प्रेरणा दायक पत्रिका है इस आध्यात्मिक पत्रिका के माध्यम से आपने विश्व को वेदमय बनाने का जो कार्य आरम्भ किया है बड़ा ही महत्व का है।

आपने जो भारतीय आर्य-प्रतिनिधि सभा का गठन किया है—उसके लिए बधाई !

इस बार दीपावली के जनज्ञान में छाए लेखक श्री कैलाश सत्यार्थ शास्त्री का एक लेख देखा—आज तक इतनी सही आर्य समाज की क्रान्तिकारी व्याख्या देखने को नहीं मिली !

आशा है इस तरह के लेख आप छाप कर नौजवानों को उत्साहित करते रहेंगे और स्वामी दयानन्द-सरस्वती के सन्देश का प्रचार करते रहेंगे !

साधन्यवाद
—श्रीमल नामदेव

## नव उत्साह की प्रेरक

परम पूज्य भारतेन्द्र नाथ जी, नमस्कार।

कुछ दिन पहले हमने दयानन्द संस्थान को पत्र लिख कर जन-ज्ञान का नमूना मंगवाया तथा वह हमें प्राप्त हो गया, पढ़ने के बाद रोम-रोम में एक नया उत्साह जाग उठा। आप की स्पष्टता ने हमारे दिलो-दिमाग से एक बहुत बडा बोझ उतार दिया। एक मुद्दत से हमें भी किसी ऐसे महापुरुष की खोज थी जो हमें आवाज देकर बुलाए कि आओ देश जाति के प्रति श्रद्धा रखने वाले परवानो आओ हम एक दूसरे के सहयोग से मानव का कुछ उपकार करें।

हमारे इस इलाके की जनता को गुमराह करने वाले कई पन्थ पैदा हो गए। इस इलाके में अशिक्षा का अंधेरा अभी तक छंटने में नहीं पाया है। देहात के लोगों को कुछ स्वार्थी प्रचारक लूटते हैं। यह सब देख कर हमारी आत्मा को बड़ा क्लेश होता है लेकिन क्या करें कोई साधन नहीं नजर आता जिससे दिन प्रतिदिन पर फैलाते हुए अज्ञान के अन्धेरे को दूर किया जा सके। वैसे हम हर रविवार को आर्यसमाज मंदिर में हवन पर पहुँच जाते हैं। कई बार कोशिश की कि हवन के बाद सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा जाए वेदभाष्य भूमिका को कुछ अध्ययन किया जाए। लेकिन हमारी इस बात को ध्यान में ही नहीं लिया जाता। इसलिए हमें सत्यार्थ प्रकाश पढ़ कर लोगों को सुनाने का अलग ही प्रबन्ध करना पड़ा है।

हर तरह से आम जनता को आर्य समाज की तरफ आकर्षित करने के लिए हम प्रयत्नशील है। जहां कहीं भी



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारी बातचीत का सिलसिला चलता है महर्षि दयानन्द के ही सिद्धान्तों का विषय लेकर हम हर सभा में हर महफिल में बात करते हैं। हमारी बातो से प्रभावित हो कर हमारे साथी जब हमारे साथ आर्यसमाज मंदिर में जाते हैं तो स्वार्थी नेताओं का रवैया देख कर पीछे हट जाते है। इससे बढ़ कर हमारे साथ अन्याय क्या होगा कि हमें अपने विचार व्यक्त करने का भी मौका नहीं दिया जाता। महर्षि दयानन्द के विषय में एक गीत जिसे हम अनेकों बार लोगों के सामने गा चुके हैं तथा तथा आप की सेवा में भी भेज रहे हैं मेरा ख्याल है गीत आपको पसन्द आएगा।

गीत:— ऋषि दयानन्द आए, भारत के भाग जगाए।
वैदिक धर्म अमर फल वाले, घर-घर बाग लगाये॥ ऋषि ··

१— वह पर उपकारी अटल व्रत धारी, धर्म पे सब न्योछावर कीना।
अखण्ड ब्रह्मचारी सृष्टि माने सारी, जो न होने वाला था वह कर दीना।
मिथ्या धर्म चलाने वाले, देख उन्हें घबराए॥ ऋषि दया···

२— सभी को है पढ़ाना अविद्या को मिटाना, यही था उनका अटल इरादा।
पढेंगी माता बहना, है विद्या सच्चा गहना, न डाले इसमें कोई बाधा।
सब का है अधिकार बराबर, न कोई बात भुलाए॥ ऋषि दया···

३— बाल विवाह रोका दहेज को भी टोका, न बेचो कोई बेटी बेटा।
न विधवा को मारो, उसे भी तो उभारो, बहुत अबलाओं का दुःख मेटा।
नगर-नगर में शहर-शहर में विद्यालय खुलवाए॥ ऋषि दया···

४— अछूतों को उभारा विरोधी जग सारा, मगर वह शेर कभी न डोला।
अनेकों ने सताया, अनेकों ने दुखाया, मगर निज दुखड़ा कभी न खोला।
विष देने वाले तक को जो, नहीं सजा दिलवाए॥ ऋषि दया···

५— सुनो रे जग वालो, यह दिल में बसा लो, कि वैदिक धर्म सभी से ऊंचा।
मिलेंगे उजियारे कटेंगे दुःख सारे कि यह है सर्व सुखों का कूचा।
जो कोई इसको अपनाए वह "राजहंस" कहलाए॥ ऋषि दया···

हां तो यह है मेरी कलम का एक नमूना। आप इसी गीत से अन्दाजा लगा लें कि महर्षि दयानन्द के प्रति हमें कितनी श्रद्धा है तथा जानकारी है।

—जगदीश कालांवासी

## आपके विरोधी भी ··

मान्यवर भारतेन्द्र नाथ जी, नमस्ते!

आपने लोकप्रिय, निष्पक्ष, धार्मिक क्रान्तिकारी मासिक पत्रिका "जनज्ञान" का साप्ताहिक संस्करण निकालने का बीड़ा उठाया है। निःसन्देह आप बधाई के पात्र है, क्योंकि समूची आर्य जनता के अन्तःकरणों की सबसे प्यारी जनप्रिय पत्रिका "जनज्ञान" का साप्ताहिक संस्करण देख कर मैं यह देख रहा हूँ एवं अनुभव कर रहा हूं कि आपसे घोर मतभेद रखने वाले और आपके विरोधी भी वर्तमान समय में यह स्वीकार करते हैं कि आपने वैदिक साहित्य के प्रकाशन व प्रचार प्रसार में जिस तत्परता और दक्षता का परिचय दिया है, वह अपने आप मे एक अनूठी मिसाल बन गया है।

—विद्येन्द्र आर्य, विदिशा



Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

# वैदिक साहित्य

**१. धरती का स्वर्ग : गृहस्थाश्रम**

लेखक—श्री पं० शिवकुमार शास्त्री काव्य-व्याकरण तीर्थ, संसद् सदस्य । मूल्य १)५०

पं० शिवकुमार जी शास्त्री आर्यसमाज के पुराने महोपदेशक रहे हैं। पिछले ३० वर्षों के अपने अनुभवों को उन्होंने "धरती का स्वर्ग" नामक पुस्तक में प्रस्तुत किया है।

गृहस्थाश्रम को कैसे स्वर्ग बनाया जाए ? इस विषय में शास्त्री जी का मार्गदर्शन सभी के जीवन को नयी प्रेरणा देने में समर्थ है।

पुस्तक का मूल्य लागत मात्र १)५० है।

**२. उपदेश-मञ्जरी**

महर्षि दयानन्द के उपदेशों का यह संग्रह प्रचार की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी है । मूल्य २), किन्तु १०० मंगाने पर केवल १००) सैकड़ा।

**३. धर्म का सार**

स्व० पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय लिखित यह पुस्तक प्रचार के लिए अत्यन्त उपयोगी है। साधारण व्यक्तियों को समझाने के लिए इसे ६ कथाओं में प्रस्तुत किया गया है। मूल्य १) किन्तु १०० मंगाने पर ६५) सैकड़ा,

**४. महान् दयानन्द** मूल्य १)५० १००) सैकड़ा

महर्षि दयानन्द को विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रस्तुत करते हुए पं० शिवदयालु जी ने इस अनमोल पुस्तक में प्रस्तुत किया है।

**५. आदर्श परिवार** ४०) सैकड़ा

राजस्थान के भूतपूर्व मंत्री श्री जुगलकिशोर जी लिखित यह पुस्तक प्रचार व विवाह आदि पर बांटने के लिए विशेष उपहार है।
मूल्य ६० पैसे।

**६. प्रभु के चरणों में** मूल्य १.५०।

प्रसिद्ध विद्वान् पं० हरिशरण जी द्वारा सामवेद के कुछ मंत्रों की सरल व्याख्या प्रार्थना रूप में प्रस्तुत की गयी है। मंत्रों को पढ़ते हुए साधक भाव विभोर हो जाता है।

**७ वन्दना के स्वर** मूल्य ८)

संपादक—श्री क्षेमचन्द्र सुमन
डिलक्स १५)

**अधिक से अधिक मंगाएं : बांटें**

**जन-ज्ञान प्रकाशन नई दिल्ली-५**

# संस्थान के नए प्रकाश

**१. आर्याभिविनय**

काव्यमय व्याख्या सजिल्द अजिल्द १.५०।

**२. उपदेश मंजरी**

महर्षि के पूना व्याख्यानों का संग्रह
मूल्य १.५

**३. वैदिक गृहस्थाश्रम—सजिल्द**

पं० विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड
मूल्य ६ रु०

**४. वैदिक गीता (पद्यानुवाद)**

मूल्य १ रु०

**५. दयानन्द चित्र दर्शन**

मूल्य २० रु०
किन्तु प्रचार के लिए
अभी मूल्य १५ रु०

**६. संस्कार विधि**

राज संस्करण बड़ा साइज, कपड़े की जिल्द मूल्य ६ रु०

**शीघ्र मंगाइए**

**दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली-११०००५**

मुद्रक-प्रकाशक-सम्पादक पंडिता राकेश रानी द्वारा सैनी प्रिन्टर्स दिल्ली में छपा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai



इम
के
महा
कर
जा
जा

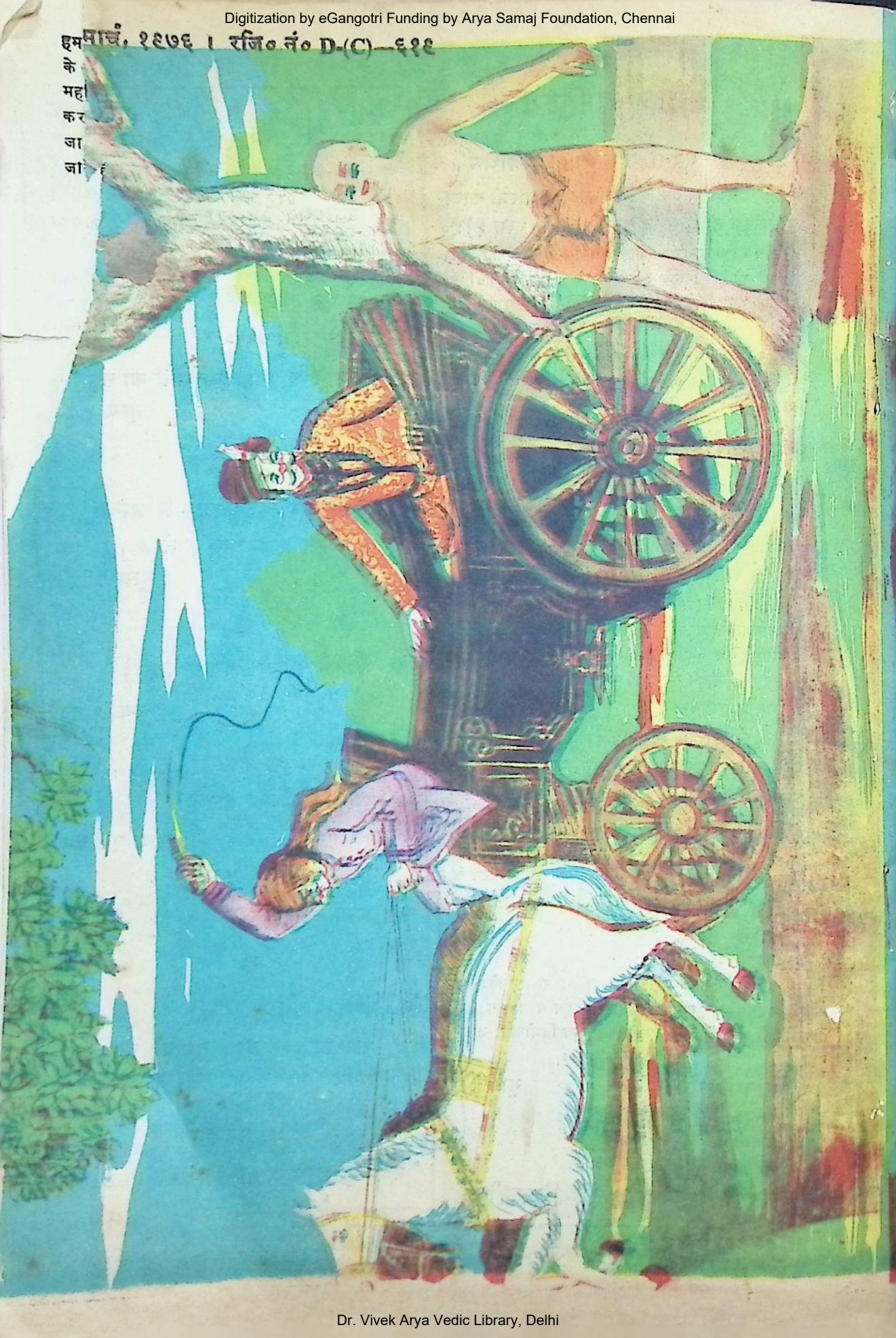

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi